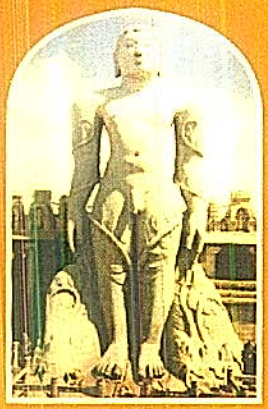

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

VOLUME : IV ISSUE : 9 MUMBAI, MARCH 2014 PAGES : 32 PRICE : ₹25

तीर्थंकर भगवान श्री 1008 महावीर स्वामी, पावागिरि ऊन

पतित पावन तरण तारण, हमारी फरियाद सुन लेना।
तेरे चरणों में मस्तक है, हमें अपना बना लेना।।

R. K. MARBLE GROUP

Corporate Office : Makrana Road, Madanganj-Kishangarh, Dist.Ajmer(Raj.)-305801
Tel : +91 1463 260101-10, Fax : +91 1463 250601
E-mail : info@rkmarble.com, Website : www.rkmarble.com

अध्यक्षीय मनोभावना

साधर्मी भाईयो-बहिनो,

सादर जय जिनेन्द्र।

आदि ब्रह्मा, आदि तीर्थंकर भगवान वृषभनाथ - आदिनाथ स्वामी के गर्भ एवं जन्म कल्याणक (तीर्थंकर ऋषभदेव जयंती) महा पर्व (25 मार्च) की बधाई प्रेषित करता हूँ। कुंडलपुर के **बड़े बाबा**, सांगानेर, चाँदखेड़ी, आवां (राजस्थान), हनुमानताल जबलपुर, बावनगजा एवं थुबोनजी के **मनोहारी एवं अतिशय युक्त जननायक** के श्री चरणों में कोटि-कोटि नमन्।

भगवान आपकी वीतरागी मुद्रा को जो भी अंतर चक्षुओं से देखता है ... बस देखता ही रह जाता है। आपकी अद्भुत मुस्कान को निहारा तो बस आत्मीय चाहत पैदा हो गई। आपकी मूर्ति के समक्ष जब-जब अष्ट द्रव्य से पूजन का भाव संजोया ... तो बस .... भवतापहारी-पूजा में-गहरे-डूबता चला गया। इस युग के प्रथम तारणहार ... यह संसारी प्राणी समझ ही नहीं पाया ... उन भावों की गूढ़ता को ... फिर भी .. गुनगुना उठा...

तुझे देखा ... तुझे चाहा ... तुझे पूजा हमने
बस इतनी खता है मेरी, और खता क्या ?

कर्नाटक की अविस्मरणीय यात्रा के बाद, विगत दिनों राजस्थान की धरा को नमन् करते हुए, अतिशयकारी क्षेत्रों एवं जिन मंदिरों के दर्शन-वंदना का अपूर्व अवसर मिला।

राजस्थान अंचल के मंत्री, कर्मठ समाजसेवी, श्रमण भक्त भाई श्री रविन्द्र जी बज एवं जयपुर महिला मंडल की मंत्री श्रीमती पूजा बज के साथ सपरिवार, जयपुर भट्टारक जी की नसिया जी, सांगानेर जी, सांवला जी मंदिर जी, श्री चूलगिरि जी, श्री पदमपुराजी, सांखना जी, श्री महिन्दवास, श्री आंवा जी, श्री टोंक जी के अतिशयकारी, अद्भुत आल्हादकारी प्रतिमाओं के दर्शन-अर्चन का सौभाग्य मिला। साथ ही सभी क्षेत्रों की कमेटियों के समर्पित पदाधिकारियों के साथ क्षेत्रों की व्यवस्था एवं भावी योजनाओं की जानकारी का लाभ अर्जित किया। राजस्थानी परम्परा के अनुरूप सभी जगह, रंग-बिरंगी पगड़ी एवं साफों से हुए सम्मान एवं स्नेह के क्षण-जीवन में-इन्द्रधनुषी आभा से - हृदय को सराबोर कर गये।

श्री संघी जी मंदिर, सांगानेर के सभागृह में अचल सदस्यों के बीच, तीर्थक्षेत्र कमेटी की योजनाओं का विवरण देने का मौका मिला।

भट्टारकजी की नसियां में श्री महावीर जी अतिशय क्षेत्र कमेटी के चुनाव-23 फरवरी को सर्व सम्मति से निर्विरोध सम्पन्न हुए। ट्रस्टियों में देश के इतने ख्यातिलब्ध न्यायाधिपति, प्रशासनिक दक्षता वाले श्रेष्ठ आई.ए.एस., आई.पी.एस., वरिष्ठ वकील, कर्मठ समाजसेवी एवं उद्योग जगत के रत्न शामिल हैं जिन्हें जैन जगत की GALAXY OF STARS की उपमा से नवाजा जाना चाहिये।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, परम संरक्षक, आदरणीय श्री नरेश कुमार जी सेठी, आई.ए.एस. ने सभी ट्रस्टियों से मेरा परिचय कराया। श्री महावीरजी अतिशय क्षेत्र के नव निर्वाचित अध्यक्ष, परम सम्माननीय जस्टिस नरेन्द्र मोहन जी कासलीवाल (पूर्व मुख्य न्यायाधिपति, सुप्रीम कोर्ट) एवं कमेटी के पदाधिकारियों को बधाई प्रेषित करते हुए-मैंने अनुरोध किया कि सभी वरिष्ठ ट्रस्टियों (75वर्ष के ऊपर) के मार्गदर्शन में अब 4-6 नये कर्मठ समाजसेवियों का चयन जरूरी है श्री महावीर जी अति. क्षेत्र के और अधिक चहुंमुखी विकास हेतु। वरिष्ठों की मुस्कान से लगा कि सभी ने इस सुझाव का स्वागत किया।

इन पांच दिनों मेरा सौभाग्य था कि, मैं परम सम्माननीय

जस्टिस नरेन्द्र मोहन जी कासलीवाल, जस्टिस एन.के.जैन (पूर्व मुख्य न्यायाधिपति-कर्नाटक-तमिलनाडु उच्च न्यायालय), श्री नरेश कुमार जी सेठी, आईएएस, श्री शांति कुमार जैन, आईपीएस (पूर्व डी.जी.पी.चंडीगढ़), श्री अशोक जैन, आई.ए.एस.(मुख्य निर्वाचन अधि.राजस्थान), श्री माणिकचन्द जी पाटनी, श्री राजकुमार जी काला, वरिष्ठ एडवोकेट, श्री सुधांशु कासलीवाल, न्यायाधिपति श्री नरेन्द्र कुमार जी जैन, श्री बलभद्र जी जैन, श्री प्रवीण कुमार जी छाबड़ा, श्री सुधीर जी जैन (अध्यक्ष- पदमपुराजी), श्री ज्ञानचन्द जी झांझरी, श्री भँवरलाल जी सोगानी, श्री राजेन्द्र गोधाजी, श्री विवेक काला जी, श्री गणेश राणा जी, श्री बिलाला जी, श्री चिंतामणि जी बज एवं सभी मंदिर कमेटियों के पदाधिकारियों से मिल सका- प्रेरणा पा सका। कुछ गुन सका।

जयपुर शहर, पूरे देश में सिर्फ दिगम्बर जैनों का **मुकुट** ही नहीं सिर्फ बेशकीमती **रत्नों** का नगर ही नहीं, सिर्फ जैन-दर्शन के विद्वानों का घर ही नहीं सिर्फ हजारों की संख्या में- **मूल पांडुलिपियों** का ग्रंथागार ही नहीं, **जीवंत रत्नों का भंडार भी है**। आचार्यों-महाश्रमणों की तपस्थली भी है। विद्वानों की सृजन भूमि भी है, समाजसेवियों-दानवीरों-भामाशाहों की पूजा स्थली भी है और सम्पूर्ण देश के लिए जिन मंदिरों से आच्छादित **'जैन आकाश गंगा'** भी है।

श्री महावीर दिगम्बर जैन पब्लिक स्कूल (अंग्रेजी-हिन्दी) जयपुर के परिसर एवं सम्पूर्ण योजनाबद्ध-विकास से सज्जित विद्यालयों के सभी विभागों को देखने-समझने का सुअवसर प्राप्त किया, शिक्षा समिति के प्रेसीडेंट आ. श्री नरेश कुमार जी सेठी साहब ने। उनके मार्गदर्शन में- स्कूल प्राचार्य कर्नल शर्मा जी, मैडम रश्मि तलवार जी ने विद्या मंदिर के कोने-कोने से अवगत कराया। इस सुन्दर विद्यालय में, प्रांगण, कक्षायें, कम्प्यूटर लेबस, जिनम्युजियम, नृत्य कक्षायें, कला वीथिकायें, खेल प्रांगण एवं अनुशासित बच्चों की उछल कूद, अठखेलियां तथा बेगपाइपर बेंड की धुन भी सुनने का मौका मिला। कत्थक नृत्य एवं ऐरोबिक्स करते हुए बच्चों को देखना मंत्र-मुग्ध सा कर गया। पैर अपने आप थिरकने लगे। शिक्षा का ऐसा अनूठा-अनुशासित मंदिर अनुकरणीय लगा। सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं का सान्निध्य पाकर हृदय बहुमान से भर गया। काश... हमारे अन्य शहरों के जैन समाज द्वारा संचालित स्कूल भी- इन्हीं के नक्शे कदम पर ख्याति अर्जित कर सकें।

स्कूल के बरांडे की दीवार पर लगा निम्न पोस्टर .....नया चिंतन दे गया-

बीता हुआ कल - 'स्मृति है'
आने वाला कल - 'सपना है'
केवल वर्तमान ही - 'अपना है'

राजस्थान की पवित्र धरा पर, विशाल जिनालय, प्राचीन एवं मनोहारी प्रतिमाएँ, प्राचीन हस्तलिखित पांडुलिपियों का भंडार एवं संस्कारों से ओत-प्रोत, पंच परमेष्ठी के उपासक- जिन भक्तों के ल।ध। की संख्या वाला अंचल -पूरे देश में जैन जगत का गौरव हमारे इतिहास का स्वर्णिम अध्याय है।

वर्तमान शासन नायक भगवान महावीर स्वामी की जन्म जयंती चैत्र शुक्ल त्रयोदशी (13 अप्रैल) पूरे देश में **'जियो और जीने दो'** के हृदयग्राही संदेश के साथ धूम-धाम से मनायें। जैन धर्म के सभी अंगों को एक साथ जुलूस में शामिल होकर, जीव दया- अहिंसा- शाकाहार के गगनभेदी नारों के साथ, एकता के सूत्र को गुंजायमान करना है। जय महावीर - जय जैन धर्म।

प्रभु चिंतन करो, प्रभु-प्यारो,
दो घड़ी मन प्रभु में लगा लो।
स्वांस की हर लड़ी कीमती है,
व्यर्थ जाने से इनको बचा लो।।
प्रभु चिंतन ..... करो प्रभु प्यारो .....

'जय जिनेन्द्र'

'जय जय गुरुदेव'

आपका ही,

सुधीर जैन

तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामंत्री श्री पंकज जैन दीप प्रज्ज्वलन करते हुए तथा परम पूज्य आचार्य श्री ज्ञानसागरजी एवं परम पूज्य आचार्य विद्यासागरजी महाराज के प्रवेशद्वारद्वय के निर्माण हेतु 11 लाख की घोषणा

तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामंत्री श्री पंकज जैन तथा श्रीमती वैशाली जैन द्वारा शास्त्रभेंट एवं गौशाला हेतु स्तुत्य दान (11लाख) की घोषणा

आर्यिका रत्न दृढ़मति माताजी के दीक्षा दिवस पर कटनी (म.प्र.) में आयोजित भव्य समारोह में श्री पंकज जैन एवं श्रीमती वैशाली जैन का आत्मीय स्वागत एवं सम्मान

जीवन की सच्चाई भविष्य की परछाई होती है।

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 4 अंक 9 मार्च 2014

परामर्श मण्डल

डॉ. सुरेन्द्र जैन 'भारती', बुरहानपुर
डॉ. नीलम जैन, पुणे
श्री संजय जैन 'मैक्स', इंदौर
श्री श्रीकिशोर जैन, दिल्ली

संपादक

उमानाथ आर. दुबे

कार्यालय

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370

e-mail : tirthvandana4@yahoo.com
e-mail : tirthvandana4@gmail.com
Website : www.digamberjainteerth.com

'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी.पी.रोड, मुंबई के सेविंग खाता नं.13100100008770 अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी.पी.टैंक, मुंबई के सेविंग खाता नंबर 001210100017881 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें.

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

विज्ञापन आमंत्रित हैं.

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादक का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

जैन धर्म के तृतीय तीर्थंकर भगवान श्री संभवनाथ	7
अहिंसा के अग्रदूत भगवान महावीर	9
भगवान महावीर के अभिनव प्रयोग	11
वैशाली - जैसी सुनी, जैसी देखी, वैसी	12
श्री सुधीर जैन द्वारा राजस्थान प्रांत का दौरा	14
शिक्षा सुधारक सृजन शिलान्यास समारोह	21
अंचलीय समिति के अध्यक्षों के चुनाव	23
हमारे नये बने सदस्य	28

सिद्धक्षेत्र सोनागिर ग्रन्थ का प्रकाशन

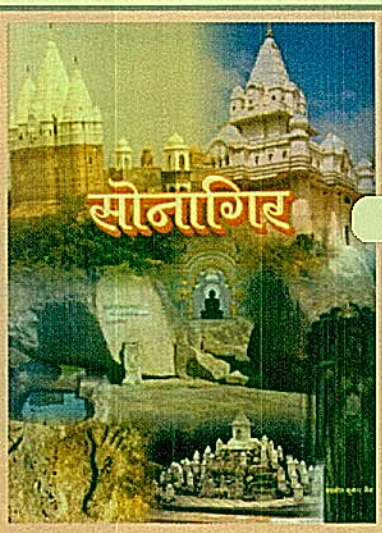

मान्यवर,

सिद्धक्षेत्र सोनागिर के ग्रन्थ का प्रकाशन भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अवधान में सुप्रसिद्ध युवा इतिहासविद् डॉ. नवनीत जी जैन द्वारा लिखा गया है। प्रस्तुत कृति क्षेत्र के ऐतिहासिक और पुरातात्विक महत्व की प्रामाणिक आख्या प्रस्तुत करती है और करती है आवाहन सभी तीर्थक्षेत्रों के प्रबंधकों से भी कि आप भी इसी प्रकार अपने तीर्थक्षेत्र का प्रामाणिक ग्रन्थ छपवायें, जिससे तीर्थभक्तों को उनके तीर्थ की वंदना के पवित्र भावों के सर्जन में निमित्त बन सके।

इस अद्वितीय कृति में इतिहास के 200 पृष्ठों के अतिरिक्त 120 पृष्ठों में इसकी प्रामाणिकता के फोटोग्राफ्स भी हैं। इसका मूल्य मात्र 200/- (दो सौ रुपया) रखा गया है, डाक खर्च अलग देय होगा। कृपया शीघ्र ही ऑर्डर कर इस ग्रन्थ को मंगवाकर अध्ययन एवं मनन करें, इसी में इसकी सार्थकता है।

- पंकज जैन, महामंत्री

धन के लिए धर्म नहीं होता, धर्म के लिए धन होता है। जहां धर्म है वहीं धन है ।

जैनधर्म के तृतीय तीर्थंकर भगवान श्री संभवनाथ

कर्मयोगी डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन
महामंत्री–श्री अ.भा.दि.जैन विद्वत्परिषद्
एल–६५, न्यू इन्दिरानगर, बुरहानपुर (म.प्र.) मो. ०९८२६५६५७३७

धर्म तीर्थ का प्रवर्तन करने वाले तीर्थंकर कहलाते हैं। जो सोलहकारण भावनाओं का चिन्तन करते हैं, तीन लोक के जीवों की कल्याण कामना करते हैं; वे तीर्थंकर नामकर्म का बंध करते हैं। जैनधर्म की २४ तीर्थंकर परम्परा में तृतीय तीर्थंकर के रूप में श्री संभवनाथ भगवान् जगत्पूज्य हुए हैं। उनके ज्ञान में तीन लोक के समस्त पदार्थ दर्पणवत् झलकते थे, पाखण्ड उन्हें देखकर दूर भाग जाता था। वे जिधर भी चल देते थे उधर सुभिक्ष फैल जाता था। वे नाम से 'संभव' थे और उन्हें देखकर सब इच्छित 'संभव' हो जाते थे। आचार्य श्री समन्तभद्र स्वामी श्री संभवनाथ जिन का स्तवन करते हुए लिखते हैं कि–

त्वं शम्भव: संभवतर्षरोगै:, संतप्यमानस्य जनस्य लोके।
आसीरिहाकस्मिक एव वैद्यो, वैद्यो यथाऽनाथरूजां प्रशान्त्यै।।१।।
अनित्यमत्राणमहं क्रियाभि:, प्रसक्तमिथ्याध्यवसायदोषम्।
इदं जगज्जन्मजरान्तकार्तं, निरंजनां शान्ति मजीगमस्त्वम्।।२।।

अर्थात् हे भगवन्! आपसे भव्य जीवों को सुख प्राप्त होता है इसलिए आप 'शंभव' इस सार्थक नाम को धारण करने वाले हैं। आप इस संसार में सांसारिक भोग–तृष्णा रूप रोगों से अतिशय पीड़ित जन समूह के लिये उस तरह फल की अपेक्षा से रहित वैद्य हुए थे जिस तरह कि अशरण मनुष्यों के रोगों की शान्ति के लिये धनादि की इच्छा से रहित वैद्य होता है।

हे भगवन्! विनश्वर, रक्षक रहित, 'मैं' ही सब पदार्थों का कर्त्ता–धर्त्ता हूँ, इस प्रकार अहंकार, ममकार की क्रियाओं से संलग्न मिथ्याभिनिवेश रूप दोष से दूषित तथा जन्म, बुढ़ापा और मृत्यु से पीड़ित इस जगत को आपने कर्म कलंक से रहित मुक्ति रूप शान्ति को प्राप्त कराया है।

उनके पूर्व भव का वृत्त इसप्रकार है–

जम्बूद्वीप के पूर्व विदेह क्षेत्र में सीता नदी के उत्तर तट पर कच्छ नामक देश के क्षेमपुरनगर में राजा विमलवाहन राज करते थे। उन्होंने विचार किया कि संसार में वैराग्य के तीन कारण हैं–

१. यह जीव अज्ञानान्धकार से आच्छादित हो मृत्यु के मुख में रहने पर भी जीवित रहने की इच्छा करता है तथा मोहकर्म के उदय से उससे निकलने का उपाय भी नहीं सोचता।

२. इस जीव की आयु असंख्यात समय की है फिर भी उन्हें ही यह शरणभूत मानता है; जबकि यही आयु के क्षण इस जीव को मृत्यु तक ले जाते हैं।

३. यह जीव अभिलाषा रूपी धूप से संतप्त होकर विषयभोग रूपी किसी नदी के जीर्ण–शीर्ण तट की छाया का आश्रय ले रहे हैं जबकि उनका यह आश्रय उनकी रक्षा नहीं कर सकता।

इस प्रकार वैराग्यमय चिन्तन करते हुए राजा विमलवाहन ने अपने सुपुत्र श्री विमलकीर्ति को राज्य सौंपकर स्वयंप्रभ जिनेन्द्र के निकट दीक्षा धारण कर ली। तपश्चरण कर उन्होंने सल्लेखनापूर्वक मरण किया और ग्रैवेयक के सुदर्शन विमान में महद् ऋद्धियों का धारक अहमिन्द्र पद पाया। वहाँ स्वर्गिक

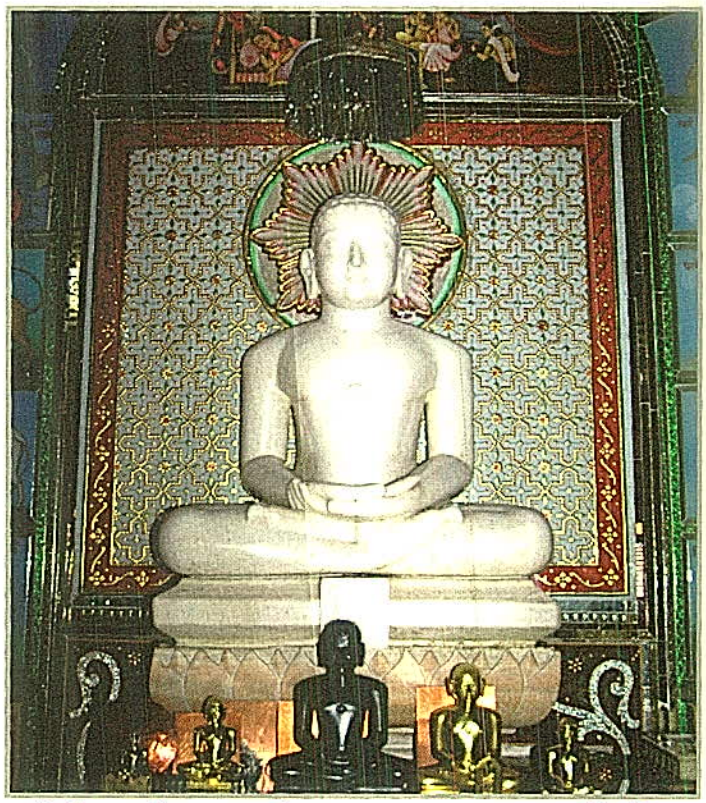

तीर्थंकर श्री 1008 संभवनाथ भगवान, श्रावस्ती क्षेत्र

सुखों का भोग करते हुए अपनी आयु पूर्ण कर वह जीव श्री संभवनाथ तीर्थंकर हुआ।

जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में श्रावस्तीनगरी के इक्ष्वाकुवंशी एवं काश्यपगोत्री राजा दृढ़राज्य तथा रानी सुषेणा के गर्भ में फाल्गुन शुक्ल अष्टमी के दिन उस अहमिन्द्र के जीव ने प्रवेश किया। नौ माह बीतने पर कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा के दिन मृगशिरा नक्षत्र और सौम्य योग में उस बालक ने जन्म लिया जो श्री संभवनाथ के नाम से जगत में प्रसिद्ध हुआ। उनका चिन्ह अश्व (घोड़ा) था। उनके जन्म पर सौधर्म इन्द्र ने आपकी स्तुति करते हुए कहा कि हे संभवनाथ! तीर्थंकर नामकर्म के उदय के बिना ही केवल आपके जन्म से ही आज जीवों को सुख मिल रहा है। इसलिए आपका संभवनाथ नाम सार्थक है–

सम्भवे तव लोकानां शं भवत्यद्य शम्भव।
विनापि परिपाकेन तीर्थकृन्नामकर्मण:।।

(उत्तर पुराण, पर्व ४९/श्लोक–२०)

श्री संभवनाथ जन्म से तीन ज्ञान के धारी थे। १००८ शुभ लक्षणों से सम्पन्न थे। उनका शरीर ४०० धनुष ऊँचा था। वे द्वितीय तीर्थंकर श्री अजितनाथ स्वामी की तीर्थपरम्परा में ३०लाख करोड़ सागर वर्ष बीतने के बात उत्पन्न हुए थे। उनकी आयु भी इस अंतराल में सम्मिलित थी। उनकी आयु ६०लाख पूर्व की थी। अपनी आयु का १/४ भाग व्यतीत होने पर वे राजा

धर्म वही है जो जीने की कला सिखलाता है।

बने। राजभोग करते हुए उन्होंने ४४ लाख पूर्व और ४ पूर्वांग व्यतीत किये। एक दिन जब वे अपने राजमहल की छत पर बैठकर आकाश की ओर निहार रहे थे तो मेघों का विभ्रम देखने से उन्हें आत्मज्ञान उत्पन्न हुआ। वे उसी समय विरक्त हो गये। उनका वैराग्य जानकर लोकांतिक देव उनके राज दरबार में आये और उनके वैराग्य की अनुमोदना करते हुए इस प्रकार कहा– प्राणी के भीतर रहने वाला आयुकर्म ही यमराज है। संसार के प्राणी इस रहस्य को नहीं जानते अत: अनन्तबार मृत्यु को प्राप्त होते हैं। यमराज इसी शरीर में रहकर इस शरीर को नष्ट करता है फिर भी इस जीव की मूर्खता देखो कि यह इसी शरीर में वास करता है। राग रूपी रस में लीन हुआ यह जीव विष के समान नीरस विषयों को भी सरस मानकर सेवन करता है। इस बुद्धि विभ्रम को धिक्कार है। आत्मा, इन्द्रिय, आयु और इष्ट पदार्थ के सन्निधान से संसार में सुख होता है सो आत्मा का सन्निधान तो इस जीव के सदा विद्यमान रहता है फिर भी यह जीव क्यों नहीं जानता और क्यों नहीं इसका विचार करता? यह लक्ष्मी बिजली की चमक के समान कभी भी स्थिरता को प्राप्त नहीं होती। जो जीव इसकी इच्छा को छोड़ देता है वही निर्मल सम्यग्ज्ञान की किरणों से प्रकाशनमान मोक्षलक्ष्मी को प्राप्त हो सकता है। इस प्रकार पदार्थ के सार को ग्रहण करने वाले संभवनाथ स्वामी की स्तुति कर लौकान्तिक देव चले गये।

लौकान्तिक देवों के इसप्रकार संबोधन के बाद राजा श्री संभवनाथ स्वामी ने अपने पुत्र को राज्य दिया और सिद्धार्थ नाम की पालकी में सवार होकर सहेतुक वन में जाकर १०००राजाओं के साथ संयम धारण कर, वस्त्र त्याग कर, पंचमुष्टि केशलोंच कर दीक्षा ग्रहण कर ली। दीक्षा ग्रहण करते ही उन्हें मन:पर्यय ज्ञान की प्राप्ति हुई।

दिगम्बर दीक्षा ग्रहण करने के दूसरे दिन मुनि श्री संभवनाथ ने आहारचर्या हेतु श्रावस्तीनगरी में प्रवेश किया और वहाँ के राजा सुरेन्द्रदत्त के यहाँ आहार ग्रहण किया। आहार ग्रहण करने पर पंचाश्चर्य प्राप्त हुए।

तदनन्तर महामुनि श्री संभवनाथ स्वामी ने १४वर्ष तक मौनपूर्वक तपश्चरण किया; जिसके फलस्वरूप कार्तिक कृष्ण चतुर्थी के दिन, मृगशिरा नक्षत्र में, सहेतुक (दीक्षा) वन में शाल्मली वृक्ष के नीचे उन्हें चार घातिया कर्मों के नष्ट करने पर अनन्त चतुष्टय के साथ केवलज्ञान की प्राप्ति हुई। देवों ने आकर केवलज्ञान कल्याणक महोत्सव मनाया।

केवलज्ञान प्राप्ति के उपरान्त बारह सभाओं से युक्त समोशरण में प्रभु श्री संभवनाथ अंतरिक्ष में विराजमान हुए। उनके चारुषेण आदि १०५ गणधर थे। २१५० पूर्वधारी, १,२९,३०० शिक्षक, ९,६०० अवधिज्ञानी, १५,००० केवलज्ञानी, १९,८०० विक्रियाऋद्धिधारी, १२,१५० मन:पर्ययज्ञानी, १२,००० वादी; इस तरह वे २लाख मुनियों से समोशरण में सुशोभित थे। धर्मार्या आदि ३,२०,००० आर्यिकायें, ३,००००० श्रावक, ५,००००० श्राविकायें, असंख्यात देव–देवियां, संख्यात तिर्यंच उनकी स्तुति करते थे।

तीर्थंकर जिन श्री संभवनाथ जी ने अपने उपदेशों के माध्यम से सुख का मार्ग बताया और अनेकान्त दृष्टि का प्रतिपादन किया। आचार्य श्री समन्तभद्र ने वृहत्स्वयंभू स्तोत्र में लिखा है कि–

शतह्रदोन्मेषचलं हि सौख्यं, तृष्णामयाप्यायनमात्रहेतु:।।
तृष्णाभिवृद्धिश्च तपत्यजस्रं, तापस्तदायासयतीत्यवादी:।।३।।

अर्थात् निश्चय से इन्द्रिय जन्य सुख बिजली की कोंध के समान चंचल है। तृष्णा रूपी रोगी की पृष्टि मात्र का कारण है और तृष्णा की चौमुखी वृद्धि निरन्तर ताप उत्पन्न करती है एवं वह ताप जगत को क्लेशों की परम्परा द्वारा दु:खी करता है; ऐसा आपने कहा था।

तीर्थंकर श्री संभवनाथ जी के तत्त्वोपदेष्टा रूप के विषय में उन्होंने लिखा कि–

बन्धश्च मोक्षश्च तयोश्च हेतू, बद्धश्च मुक्तश्च फलंच मुक्त:।
स्याद्वादिनो नाथ तवैव युक्तं, नैकान्तदृष्टेस्त्वमतोऽसि शास्ता।।४।।

हे स्वामिन्! बन्ध और मोक्ष तथा बन्ध और मोक्ष के हेतु, बद्ध आत्मा–मुक्त आत्मा और मुक्ति का फल; यह सब अनेकान्त मत से निरूपण करने वाले आपके ही मत में ठीक होता है, एकान्त दृष्टि रखने वालों के मत में ठीक नहीं होता; इसलिए आप ही तत्त्वोपदेष्टा हैं।

तीर्थंकर जिन श्री संभवनाथ की कतिपय विशेषतायें आचार्य श्री गुणभद्र स्वामी ने उत्तरपुराण में इस प्रकार बतायी हैं–

१. तीर्थंकर श्री संभवनाथ स्वामी ३४ अतिशय और ८ प्रातिहार्यों के स्वामी थे।

२. तीर्थंकर श्री संभवनाथ स्वामी सूर्य के समान प्रकाशमान थे।

३. तीर्थंकर श्री संभवनाथ स्वामी शुद्ध, बुद्ध और मोक्षलक्ष्मी युक्त थे।

४. तीर्थंकर श्री संभवनाथ स्वामी निष्कलंक, निष्पाप थे।

५. तीर्थंकर श्री संभवनाथ स्वामी निरातंक–निर्भय और नीरोग थे।

६. तीर्थंकर श्री संभवनाथ स्वामी शत्रु रहित थे।

७. तीर्थंकर श्री संभवनाथ स्वामी सदा मुनियों से युक्त थे।

८. तीर्थंकर श्री संभवनाथ स्वामी शत्रु रहित होने पर भी काम के शत्रु थे।

९. तीर्थंकर श्री संभवनाथ स्वामी महान् तेज के धारक थे।

१०. तीर्थंकर श्री संभवनाथ स्वामी सद्वृत्त–सदाचार के धारक थे।

११. तीर्थंकर श्री संभवनाथ स्वामी ज्ञानादि गुणों से परिपूर्ण थे।

१२. तीर्थंकर श्री संभवनाथ स्वामी का अभ्युदय ध्रुव (स्थायी) था।

१३. तीर्थंकर श्री संभवनाथ स्वामी तीनों लोकों के द्वारा सेवनीय थे।

१४. तीर्थंकर श्री संभवनाथ स्वामी जीवों की समृद्धि को बढ़ाने वाले थे।

१५. तीर्थंकर श्री संभवनाथ स्वामी बाह्य और आभ्यंतर अंधका नष्ट करने वाले, तीनों लोकों को प्रकाशित करने वाले थे।

१६. तीर्थंकर श्री संभवनाथ स्वामी ने अपने श्री विहार से संपूर्ण पृथ्वी के लोगों को सुख प्रदान किया और अंत में स्वयं मोक्षलक्ष्मी को प्राप्त किया।

समोशरण में दिव्यध्वनि के माध्यम से लोककल्याण का उपदेश एवं अपने श्री विहार से जन–मन को पवित्र करने वाले श्री संभवनाथ जिन ने जब आयु का एक माह शेष रह गया तब श्री विहार बंद कर सम्मेदाचल (सम्मेदशिखर) पर १००० मुनियों के साथ प्रतिमायोग धारण किया और चैत्र शुक्ल षष्ठी के दिन मृगशिरा नक्षत्र में सम्मेदशिखर के धवलकूट से निर्वाण प्राप्त कर सिद्ध पद को प्राप्त किया।

तीर्थंकर निर्वाण प्राप्ति के बाद भी जगत् को अरहन्त अवस्था में प्रतिपादित सदुपदेशों से प्रभावित करते रहते हैं। आज भी भक्तगण श्री सम्मेदशिखर जाकर उनके निर्वाण स्थल पर बने चरण चिन्हों की वंदना, पूजा करते हैं और सातिशय पुण्य की प्राप्ति करते हैं। हमें भी श्री संभवनाथ जिन; निर्वाण के लक्ष्य को संभव बनाने में कारण बनें; इस भावना से उनके प्रति हम सब नमन करते हैं।

हमारा धर्म कथनी प्रधान नहीं, करनी प्रधान है।

अहिंसा के अग्रदूत भगवान महावीर एवं उनका अलौकिक सिद्धांत

- ध्रुवकुमार जैन, कटरा मेदनीगंज, प्रतापगढ़ (उ.प्र.)

अहिंसा के अग्रदूत भगवान महावीर की 2613वीं जयंती 13 अप्रैल, 2014 को पूरा राष्ट्र मना रहा है। ईसा पूर्व 599, चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को भगवान महावीर का इस पावन भारत भूमि पर, वैशाली के कुण्डलपुर नगर में सिद्धार्थ की महारानी त्रिशला के उदर से जन्म हुआ। जैसे प्राची दिशा से सूर्योदय होने से रात्रि का गहन अंधकार मिट जाता है और एक नई [illegible]ह का आरम्भ होता है उसी प्रकार महावीर रूपी सूर्य के उदय होने से तमाम प्राणियों में एक नई आशा का संचार हुआ और एक नये युग का सूत्रपात हुआ।

यद्यपि भगवान महावीर का जन्म एक राज परिवार में हुआ था और प्रारम्भ से ही उन्हें राजसी भोग-विलास का वातावरण मिला, फिर भी वे उसमें कभी रम न सके। वे बाल्यकाल से ही एकान्त प्रिय, वैराग्यशील, भावुक और संवेदनशील स्वभाव के थे। शैशव को लांघ कर जब कुमार वर्धमान, युवा अवस्था में पदार्पण किया तो माता-पिता कुमार को गृहस्थ बनाने का विचार करने लगे, किन्तु उनकी दृष्टितो राजकीय वैभव तथा भोग विलासों से सर्वथा विमुख थी। उन्हें यौवन की उठती उमंग, मां की ममता, शासन एवं राजमहल की विशाल दीवारें भी बांधने में असमर्थ थी। उनके समक्ष मोहमाया के अनेक आकर्षण रखे गये, किन्तु महावीर विश्व की वीभत्स दशा को देखकर तड़प उठते। उनके समक्ष एक ओर तो राज्य था, कंचन कामिनी का आकर्षण था, वैभव और विलास का अंबार था, तो दूसरी ओर दुखियों की चीत्कार, जीवों पर हो रहा अन्याय, [illegible]ाचार, हिंसा और पाप का पारावार था। कहीं सुख शांति का नाम नहीं। किन्तु उनकी आंखें तो शांति की खोज, कर रही थी, और इसी के लिए उन्होंने 30 वर्ष की अल्पायु में ही मुनि दीक्षा धारण कर शांति की खोज में घर-बार, मोह-माया सब कुछ त्याग कर निकल पड़े।

मुनि के रूप में महावीर ने 12 वर्षों तक घोर तपस्या की। भयानक जंगलों में रहकर सुमेरु की तरह अडिग ध्यान रूप होकर आत्मा के पूर्वत्व को प्राप्त करने लगे। 42 वर्ष की उम्र में वर्धमान महावीर ऋजुकुला नदी के तीर पर जृम्भिक ग्राम के पास एक साल वृक्ष के नीचे ध्यान मग्न थे, तभी उन्हें केवलज्ञान प्राप्त हो गया। अपनी कष्ट, सहिष्णुता, समतादृष्टि, क्षमाशीलता, इन्द्रिय दमन, एवं मन संयमन के कारण वे महावीर बन गये और 'वीतराग' एवं समदृष्टि पद को प्राप्त हुए।

केवलज्ञान प्राप्ति के पश्चात भगवान महावीर ने राजगृही के विपुलाचल पर्वत पर सर्वप्रथम उपदेश दिया। भगवान महावीर का उपदेश किसी विशिष्ट सम्प्रदाय का न होकर प्राणी मात्र के धर्म का था, जो जैन धर्म के नाम से प्रसिद्धि है। उन्होंने मानव समाज को एक नयी विचार धारा और एक नया दृष्टिकोण दिया। मुंह से बोलकर या उपदेश देकर ही नहीं बल्कि स्वयं उदाहरण बनकर सुख-शांति और कल्याण का मार्ग दर्शाया। भगवान महावीर ने 1. आत्मवाद, 2. रत्नत्रयवाद, 3. वस्तु स्वातन्त्र्यवाद, 4. अहिंसावाद, 5. अपरिग्रहवाद, 6. अनेकांतवाद एवं 7. सर्वोदयवाद आदि लोककल्याणकारी सिद्धांतों द्वारा जनकल्याण का मार्ग प्रशस्त किया, जिनकी संक्षिप्त व्याख्या निम्नवत है -

1. **आत्मवाद :** आत्मवाद में उनका उपदेश है कि मानव जिस कुल में उत्पन्न होता है उस ही कुल में प्रचलित कुछ साम्प्रदायिक मान्यताओं का आश्रय करके धर्म मान लेता है, परन्तु धर्म के वास्तविक रहस्य से अनभिज्ञ वह सदा धर्म से वंचित ही रहता है। धर्म का रहस्य वास्तव में सम्प्रदायों के अधीन नहीं है। वह एक स्वातन्त्र्य भाव है। उन्होंने सर्व प्राणियों को समान शक्ति क धारक बतलाया और कहा कि प्रत्येक व्यक्ति अपने सुख-दुख का स्वयंकर्ता एवं भोक्ता है, कोई ईश्वर किसी को सुख-दुख नहीं देता। सुमार्ग प्राणी का मित्र है और कुमार्ग शत्रु है। आत्मा आत्म साक्षात्कार के द्वारा ब्रह्मज्ञान प्राप्त कर आत्माचरण रूप पुरुषार्थ के द्वारा प्रकट करके यह जीव परमात्मा बन जाता है। आत्मा की सर्वोच्च अवस्था का नाम ही ईश्वर है।

2. **रत्नत्रयवाद :** रत्नत्रयवाद में उन्होंने बताया कि सम्यक दर्शन, सम्यकज्ञान और सम्यक चारित्र ही मोक्ष मार्ग है। मैं चैतन्य स्वरूप आत्मा हूँ- यह सम्यक दर्शन है, समता और समता के पहिचानने का नाम- सम्यकज्ञान है और समता का आचरण करने के लिए उद्यमी होना- सम्यकचारित्र है। इन तीनों की एकता ही मोक्ष मार्ग है।

3. **वस्तुस्वातंत्र्यवाद :** इसके अंतर्गत उन्होंने 6 प्रकार के द्रव्यों के समूह का वर्णन किया है। अनंतानंत जीव, अनंतानंत पुद्गल परमाणु, एक धर्म द्रव्य, एक अधर्म द्रव्य, एक आकाश द्रव्य और असंख्यात कालाणु द्रव्य लोक में है और यह प्रत्येक द्रव्य पृथक-पृथक रूप से एक ही समय में एक साथ अपने-अपने उत्पाद, व्यय ध्रौव्य स्वरूप से आरक्षित है। उन्होंने बताया कि वस्तु स्वातंत्र की श्रद्धा से मोह नष्ट कर संसार के सारे क्लेशों को दूर किया जाता है।

4. **अहिंसावाद :** अहिंसावाद में भगवान महावीर ने अहिंसा को धर्म का आधार बतलाया। जैन धर्म की अहिंसा, अहिंसा का चरम रूप है। कषाय के वशीभूत होकर द्रव्य रूप से या भाव रूप से प्राणों का घात करना हिंसा है। जैन धर्म की अहिंसा में प्रधानतः प्राणी मात्र के कल्याण की भावना निहित है। जैन धर्मानुसार मनुष्य, पशु, पक्षी, कीड़े-मकोड़े आदि के अतिरिक्त पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति में भी जीव हैं। भगवान महावीर ने बताया है कि केवल दूसरों को मार डालना ही हिंसा नहीं है बल्कि किसी का दिल दुखाना तथा अपने

धर्म विपत्तियों में मुस्कुराना सिखलाता है।

अन्दर राग-द्वेष जनित विकारी भावों की उत्पत्ति होना ही हिंसा है। क्योंकि इससे आत्मा की प्रभुता का घात होता है। अहिंसा के ही अंग सत्य, अचौर्य और ब्रह्मचर्य आदि भी हैं।

5. **अपरिग्रहवाद :** भगवान महावीर ने दिन-प्रतिदिन बढ़ती हुई भाग-लालसा और धन तृष्णा देखकर अपरिग्रहवाद का उपदेश दिया। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार समुद्र हजारों नदियों को पाकर भी तृप्त नहीं होता, उसी प्रकार तीन लोक की सम्पदा मिल जाने पर भी मनुष्य की इच्छाएं कभी तृप्त नहीं होती। अपरिग्रह के कारण आत्मा सत्य और शांति का पात्र होता है।

6. **अनेकान्तवाद :** भगवान महावीर ने संसार में प्रचलित विभिन्न धर्मों के दृष्टिकोणों को समझने के लिए अनेकांतवाद का उपदेश दिया। उन्होंने कहा कि प्रत्येक जीव द्रव्य, पर्याय, घटना गुण अनेकात्मक सापेक्ष होते हैं। इसीलिए इन्हें अनेकांत की दृष्टि से जानना, मानना एवं कहना चाहिए। इससे जीव में सत्यग्रहिता, व्यापकता, उदारता, सहिष्णुता-भाव, अहिंसा, मृदुता, जिज्ञासा, एकता आदि गुण प्रकट होते हैं। जससे जीव विकास करता हुआ जीव से जिनेन्द्र बन सकता है।

7. **सर्वोदयवाद :** सर्वोदयवाद के सिद्धांत के द्वारा भगवान महावीर ने समाज में फैली हुई विषमता को दूर करने के लिए ऊँच-नीच का संबंध गुणों पर आधारित बतलाया। उन्होंने कहा कि ऊँच जाति या कुल में जन्म लेने मात्र से कोई ऊँच नहीं हो जाता और न ही नीच कुल में जन्म लेने से कोई नीच हो जाता है। जो अच्छे कार्य करता है वह ऊँच है और जो नीच कार्य करता है वह नीच है।

इस प्रकार भगवान महावीर ने सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक विषमताओं और असमानताओं को अपने सद्उपदेशों द्वारा दूर किया और लोगों को आत्मकल्याण के मार्ग पर अग्रसर किया।

भगवान महावीर के अलौकिक उपदेशों की आवश्यकता आज सर्वाधिक है। क्योंकि आज विश्व में चारों ओर नरसंहार, हिंसा का तांडव हो रहा है। दिनों दिन मानवीय करूणा का स्रोत सूखता जा रहा है। भौतिकता की चकाचौंध अध्यात्म के प्रकाश को मन्द कर रही है। आज दुनिया भौतिक रूप से सुखी और समृद्धि होकर भी अहिंसा के अभाव में दुखी है। विज्ञान जो मानव की सुख-सुविधा बढ़ा सकता है और कुछ अंशों में उसने सुख सुविधाओं में वृद्धि भी की, परन्तु अहिंसा के अभाव में उसने निर्माण के साथ-साथ विनाश का साधन भी प्रस्तुत किया। वर्तमान समय में विश्व में बढ़ती हुई शस्त्रास्त्रों की होड़, आणविक शस्त्रों की स्पर्धा, विभिन्न धर्मो-वर्णो-वर्गों में बढ़ती हुई असहिष्णुता, कटुता हिंसा का घोर बढ़ावा दे रही है।

भगवान महावीर विश्व की एक महान विभूति हैं। जगत के प्रेरणास्रोत है। उनकी पुण्य जयंती के मांगलिक अवसर पर यदि हम सब उनकी वाणी का स्वयं मनन करें, अनुगमन करें तथा दूसरों को भी करा सकें तो हम भी महावीर बन जावेंगे, हममें भी सन्मति का प्रकाश होगा और हम पूर्णतयः वर्धमान होंगे।

जय जिनेन्द्र।

पृष्ठ 11 से शेष.....

लें तो दुनिया में अहम की लड़ाइयाँ ही समाप्त हो जायें। यह महावीर का अपूर्व, अद्भुत और अद्वितीय वैज्ञानिक चिंतन था– अनेकान्त दर्शन। आइन्सटीन ने 'थ्योरी ऑफ रिलेटिवटी' को क्वाण्टा से जोड़ा था। महावीर ने अनेकान्त को अभिव्यक्त करने के लिये स्यात् यानी स्याद्वाद की शैली दी। स्यात् न तो शायद है न ही कदाचित। संदेह की स्थिति किंचित भी नहीं। वरन् स्वंय के सत्य का आत्मविश्वास। महावीर बहुत साहस से कहते हैं कि सत्य के लिये स्वयं को उघाड़ो, उघाड़ते चलो तो ही सत्य मिलेगा इसके लिये किसी 'पर' की जरुरत नहीं, यहाँ तक कि ईश्वर की, गुरु की या शास्त्र की भी नहीं। यदि किसी का सहारा लिया जो वह उसका सत्य होगा, 'स्व' का नहीं। जब कि स्व का सत्य ही परम सत्य होगा। महावीर किसी के अनुगामी नहीं बने, ना उन्होंने किसी को अनुयायी बनाया, अधिक से अधिक कोई सहगामी भर हो सकता है। यहीं महान आर्य संस्कृति की दो धारायें –श्रमण और वैदिक , अब अलग अलग दिखने लगीं क्योंकि स्व का यही वैज्ञानिक सत्य, लोग नहीं पचा सके और जैन धर्म को नास्तिक करार दे दिया गया। महावीर अपने युग के महान द्रष्टा थे अपूर्व बुद्ध थे उन्होंने स्व के परम सत्य के लिये विशाल फलक की खोज की और तब तक, कि प्रचलित त्रिभंगी दृष्टि को सप्तभंगी बनाया। मतलब कोई वस्तु है, नहीं है, है भी और नहीं भी, हो भी सके, नहीं भी हो सके, स्यात् है अनिर्वचनीय है, स्यात् है अनिर्वचनीय नहीं है। यह सप्तभंगी निश्चय से हैं। दरअसल अनेकान्त दर्शन को इस तरह अभिव्यक्त करने की यह शैली ही स्याद्वाद कहलायी। जो अभिनव देन है।

हाँ यदि चेतने के लिये अतीत देखना हो तो यह सब लिपटे हुये 'टेप'की तरह है, 'रिबाउण्ड' करो और देख लो, साधना में गहरे उतर कर कि पहले जन्म में भी यही हाय तौबा करते रहे हो अब भी वही कर रहे हो तो आखिर कब तक? पहले दुनिया से जुड़े थे तो राग था भौतिकता से। संन्यासी हो तो जुड़ गये विराग से पर गति दोनों में नहीं न राग में न विराग में इसलिये इन से परे बनो अर्थात् वीतराग हो जाओ तभी मुक्ति संभव है।

दरअसल अभी तक वक्ता के चातुर्य पर ध्यान दिया जाता रहा था। यह किसी ने नहीं सोचा कि सुनने वाला ग्रहण नहीं करेगा तो वक्तव्य किस काम का? महावीर ने बताया कि सुनने वाले का ध्यान प्रतिक्रमण कर, यहाँ वहाँ से लौटाओ तब वह सम्यक श्रोता यानी श्रावक कहलायेगा। श्रावक जब निर्विकार हो अपने में लौट आये तभी उसके चित्त को आत्मस्थ किया जाये– यह सामायिक है। समय माने आत्मा इसलिये सामायिक महत्वपूर्ण है यानी आत्मस्थ होना।

लेखक वरिष्ठ साहित्यकार और नेशनल 'अनेकान्त' ऐकेडमी के अध्यक्ष है।

–सम्पादक

७५ चित्रगुप्त नगर,कोटरा, भोपाल ४६२००३ मोबा. ०९८२६०१५६४३

सरलता, सादगी और सद्भावना ही जीवन का सही धर्म है।

भगवान महावीर के अभिनव प्रयोग

– कैलाश मड़बैया

महावीर जयंती एक अवसर है उन क्षणों का जब हम थोड़ा ठहर कर यह सोचें कि महावीर होने के मायने क्या है? आज भले हम अल्पसंख्यक घोषित हो गये पर हम क्या इतने सचमुच सिकुड़ गये कि बौद्ध धर्म भारत के चारों ओर विदेशों में फैल गया और अत्यन्त वैज्ञानिक एवं प्राचीन धर्म होते हुये भी जैन धर्म अपने देश में ही बट कर, टूट कर अल्पसंख्यक हो गया। ऐसा आखिर क्यों, कारण शायद यह कि हम इसे अपने दायरों से बाहर आकर इसे प्रासंगिक नहीं बना सके और दुनिया को इसकी व्यापक उपयोगिता नहीं बता सके। विचार करें कि असल में बाह्य शत्रुओं को जीतना ही क्या वीर होना है? क्योंकि यह बाहर के जो दुश्मन हैं इन्हें तो इस एटमी युग में उपेक्षा कर आगे बढ़ जायेंगे तो भी काफी कुछ काम चल सकता है। या थोड़ा बहुत उठापटक/ हाथापाई से ही काम चल सकता है पर जिन्हें बाह्य ताकत से नहीं जीता जा सकता उनके बारे में हम कभी विचारते ही नहीं। दरअसल जीतना तो है वे शत्रु जो हमारे अन्दर बैठे और लगभग अजेय हैं– क्रोध, मान, माया, लोभ, हिंसा आदि पाप इतने प्रबल हैं कि न केवल हमें सत्य की खोज से भटका रहे हैं वरन् युगों युगों या कहें जन्म जन्मान्तरों से हमें संसार में दुखी भी बनाये हुये हैं। अत: महावीर या ताकतवर वे नहीं हैं जिन्होंने अपने बल से हाथी या शेर को पछाड़ दिया, पर्वत उठा लाये या वे जो सिद्धार्थ और त्रिशला के यहाँ जन्मे थे। उन्हें गये या मुक्त हुये तो छब्बीस सौ वर्ष से अधिक हो गये पर जो नहीं गये वे है उनके अनुभूत वैचारिक सिद्धान्त जिन्हें हम थोड़ा भी अपने में उतार लें तो कुछ तो अंधकार में सच्चे सुख का मार्ग दिखना प्रारंभ हो। दरअसल वह मार्ग बिना सोचे समझे या पूजा पाठ या जुलूसों–नारों में नहीं है। यहाँ तक कि व्रत, उपवास या दान, त्याग, वैराग्य आदि भी साधन हैं साध्य नहीं। इसलिये वे भी भटकते ही रहते हैं जो केवल लकीर के फकीर बने, धार्मिक क्रियाओं की औपचारिकताओं मात्र में लगे रहते हैं वस्तुत: असल तो महावीर का मौलिक चिन्तन है जो न केवल विज्ञान के वरन् इतना प्राकृतिक है कि समझ लें तो अपने आप गहरे उतरने को जी चाहने लगे। सभी धर्मों से हटकर जैन धर्म कभी ईश्वर की आराधना इसलिये नहीं कराता कि ईश्वर तुम्हारे नाम की लाटरी खोल देगा या सन्तान दे देगा या घर/नौकरी दे देगा आदि। दरअसल ईश्वर तो दुनिया का कर्ता है ही नहीं। यहाँ तो सभी प्राकृतिक प्रक्रियायें हैं। इसलिये दुनिया में हमे अपने काम के लिये करना तो स्वंय ही पड़ेगा। यह अलग है कि हम मिथ्यात्व कर्म बन्ध करें या उनकी निर्जरा। खैर! तो आइये कुछ महावीर के उन तत्वों की बात करें जो उन्होंने अपने से पहले २३ तीर्थंकरों के किये से, आगे किये थे और जो परम सत्य हैं। अहिंसा,

अपरिग्रह और अनेकान्त की महावीर–त्रयी, अनेकान्त को छोड़कर नयी नहीं है,नये तथ्य हैं–

सापेक्षवाद अर्थात् अनेकान्त दर्शन– महान वैज्ञानिक एलवर्ट आइन्सटीन ने जब 'थ्यौरी ऑफ रिलेटिवटी' की खोज की कि कोई परमाणु केवल बिन्दु नहीं वरन् तरंग भी है तब भारतीयों को लगा कि अरे यह तो महावीर स्वामी छब्बीस सौ साल पहले सिद्ध कर चुके हैं कि कोई वस्तु 'क' केवल 'क' ही नहीं 'ख' भी है जैसे कोई व्यक्ति पिता के सापेक्ष पुत्र है तो पुत्र के लिये पिता और किसी के लिये पति और किसी का भाई भी है। मतलब एक कोण से सम्पूर्ण नहीं देखा जा सकता। सभी कोणों से देखा गया ही पूर्ण सत्य है। बस यही 'थ्योरी ऑफ रिलेटिवटी' महावीर का अनेकान्तवाद है। मतलब देखे और अनदेखे सभी पहलुओं को स्वीकार करना। 'ही' की जिद केवल अहम है जो गलत है। 'भी' ही सही है और सभी के सत्यों को स्वीकार कर

शेष पृष्ठ 10 पर .....

जीवन को उन्नत और ऊँचाई पर ले जाने के लिए धर्म ही एकमात्र साधन है।

वैशाली - जैसी सुनी, जैसी देखी, वैसी

- मुनि श्री प्रणम्यसागर

भगवान महावीर की जन्म भूमि वैशाली वासो कुण्ड है। यह शास्त्रीय और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से अनेक मनीषियों से एक मत से मान्य है। वैशाली के ग्राम बौना पोखर; जहाँ उसी पोखर से निकली मूर्ति ही मूलनायक के रूप में विराजमान है। इस पोखर (तालाब) के आसपास पुरा सम्पदा अभी भी बिखरी पड़ी है, ऐसा गाँव के लोग कहते हैं। न केवल जैन मूर्तियाँ अपितु अजैन मूर्तियों की प्राप्ति भी यहाँ खुदाई में होती है। राजा चेटक का यह पहला विशाल गणतंत्र था, जिसमें प्रजातांत्रिक पद्धति से न्याय व्यवस्था सुचारू रूप से चलती थी। कहते हैं कि, यह राजनैतिक व्यवस्था उस समय इतनी सुदृढ़ थी कि महात्मा बुद्ध ने अपने संघ का विभाजन उन्हीं वैशाली के लिच्छिवियों और वज्जि संघ के संघटन के आधार पर किया था। इस पोखर और पास में राजा विशाल के गढ़ (किले) के पास से बहुत-सी सामग्री प्राप्त हुई है, जो राजकीय और केन्द्रीय पुरातात्विक संग्रहालय में पहुंचा दी गई है। सन् 1952 में बौना पोखर से एक और जैन मूर्ति खुदाई में मिली थी वह भी संग्रहालय में रख दी गयी। 1942 ई. में राजा के गढ़ से एक प्याला निकला जो बहुत चमकदार था, वह चीनी की मिट्टी का बना जैसा लगता था। वह प्याला वैशाली के म्यूजियम में कुछ दिन रखा रहा। जब एक अमरीकी पर्यटक आया तो उसने उस प्याले की चमक और मिट्टी को देखकर उसे खरीदना चाहा। उसका कहना था कि यह प्याला 2500 वर्ष पुराना है, इसे खरीदने के लिए उसने राज्य सरकार से संपर्क किया। बिहार सरकार ने बातचीत करने के उपरान्त उस प्याले को केन्द्रीय सरकार को सौंप दिया और वह प्याला केन्द्रीय संग्रहालय में पहुँच गया।

इस वैशाली से लगभग 5 कि.मी. की दूरी पर वह स्थान है जो वासो कुण्ड कहलाता है। पहले इसका नाम निवास कुण्ड था बाद में यह वासोकुण्ड के रूप में प्रचलित हो गया। उसी ग्राम में जहाँ भगवान महावीर स्मारक बना है वह भूमि, पवित्र भूमि है। सदियों से ग्रामवासियों के लिए पीढ़ी दर पीढ़ी यह मान्यता चली आ रही है कि भगवान महावीर का यह जन्म स्थान है। वे लोग इस भूमि को इतनी पवित्र मानते हैं कि उस भूमि पर ग्रामवासी कभी खेती नहीं करते थे, क्योंकि खेती करेंगे तो हल चलाना पड़ेगा, जिससे उसकी पवित्रता नष्ट हो जायेगी। अतः हल न चलने के कारण वह अहल्य भूमि के नाम से जानी जाने लगी। उसी भूमि के निकट एक पीपल का वृक्ष है। यह वृक्ष भी भूमि की तरह पूजा का स्थान है। भगवान महावीर के नाम से जुड़ा यह वृक्ष यदि कभी आँधी, तूफान में गिर जाता तो ग्रामवासी उसी स्थान पर पुनः वृक्ष लगा देते थे। आज भी यदि ग्राम में कोई विवाह या धार्मिक त्यौहार आता है तो लोग प्रथम उस वृक्ष के निकट अहल्य भूमि को पूजकर अपना आगे का कार्यक्रम करते हैं। अभी भी पुष्प, बताशा आदि चढ़ाकर भगवान महावीर का नाम लेकर उस स्थान की पूजा ग्रामवासी करते हैं।

जिस भूमि पर भगवान महावीर स्मारक का शिलान्यास 1956ई. में राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्रप्रसाद जी और साहू शांति प्रसादजी के द्वारा किया गया है, वहीं निकट में एक मंदिर निर्माण का कार्य चल रहा है। पास में ही एक प्राकृत शोध संस्थान है, जो विशालकाय और विपुल पुस्तक संग्रहालय से सहित है। इस समस्त लगभग 17 एकड़ भूमि को नथुनी सिंह और ग्राम वासियों ने उस समय दान में दिया था। इन्हीं नथुनी सिंह के पुत्र जोगेन्दर सिंह हैं, जो वर्तमान में जैतपुर में हैं। आप सरल स्वभावी और महावीर के वंशज, ज्ञातृवंशी क्षत्रिय हैं। आपने ही मुझे यहाँ की स्मृतियों से परिचय कराया। आज भी इस ग्राम के आसपास 25 घर हैं, जो क्षत्रिय ज्ञातृवंशियों के हैं। परंपरा से चले आ रहे, इन घरों में पीढ़ी दर पीढ़ी एक व्यक्ति ऐसा अवश्य होता था जो ब्रह्मचर्य का आजीवन जन्म से पालन करता था। कहते हैं कि ब्रह्मचर्य की प्रेरणा या शिक्षा दिए बिना ही व्यक्ति ब्रह्मचर्य को स्वीकारता था। ऐसा व्यक्ति खेती-बाड़ी से प्रयोजन रखे बिना पूजा-पाठ आदि करते हुए शांति से अपना पूरा जीवन गुजार देता था। आज भी तीन घरों में ब्रह्मचारी हैं। जोगेन्दर सिंह के पिता के पिता (बाबा) तीन भाई थे उनमें दो भाई ब्रह्मचारी थे। पिता नथुनी सिंह ने विवाह किया, उनके दो संतानें हुईं। दोनों ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर लिया। आगे कुल परम्परा की चिंजा से फिर नथुनी सिंह ने दूसरा विवाह किया, जिनसे जोगेन्दर सिंह आदि पुत्र हुए। आपके दो भाई (पहली माँ के) देवीनारायण और दीपनारायण सिंह हैं, जिन्होंने ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया था। उनमें से दीपनारायण सिंह का अवसान हो चुका है। देवीनारायण आज भी हैं। उनकी एक झोपड़ी अलग है। शांत स्वभाव से नियमित कार्य करते हुए जीवनयापन कर रहे हैं। इन घरों में आज भी जमीकन्द आदि का खानपान नहीं होता है। ये लोग अभी भी रात्रि भोजन नहीं करते हैं।

वर्तमान में वासो कुण्ड गाँव के उत्तरी और दक्षिणी खण्ड हैं। ये लोग उत्तरी खण्ड वासी हैं जिनका ऊपर परिचय दिया है। इन 25 घरों में आज भी 20 घर पूर्णतः शाकाहारी हैं। कलिकाल के प्रभाव से अब संस्कार धीरे-धीरे नष्ट होते जा रहे हैं। दक्षिणी खण्ड में रहने वाले बहुत से परिवार में मांसाहार भी होने लगा है। ब्रह्मचर्यधारी भी अब मात्र दो व्यक्ति बचे हैं। फिर भी महावीर के प्रति श्रद्धा ग्रामवासियों की बनी हुई है। पूजा-पद्धति में पूर्वज लोग क्या पढ़ते थे यह भी सब विलुप्त प्रायः हो गया है।

इस ग्राम के आसपास भी कुछ ग्राम हैं, जो महावीर की ऐतिहासिकता को सूचित करते हैं। वासो कुण्ड से एक किमी. पश्चिम उत्तर में एक गाँव है जो पहले महावीर पुर कहलाता था, आज उसे वीरपुर कहते हैं। वासो कुण्ड से 3 किमी. पश्चिम में बनिया गाँव है, जो पहले वाणिज्य ग्राम कहा जाता था। शास्त्रों में महावीर से जुड़ी इस गाँव में अनेक घटनाओं का साक्ष्य मिलता है। पास में आनंदपुर और जैनीनगर के नाम से भी गाँव है।

धर्म किसी दुकान पर नहीं मिलता जो पैसे से खरीदा जाये।

श्रद्धा की कोई भाषा-परिभाषा नहीं होती है इसी उक्ति को चरितार्थ करते हुए ग्रामवासी कहते हैं कि जब भगवान महावीर का जन्म हुआ तो उस समय इन्द्र ने रत्नों की वर्षा की थी वे रत्न आज भी प्राप्त होते हैं। एक सत्य घटना है कि बनिया गाँव में एक मजदूर ईट बना रहा था। उसने ईंटा बनाने के लिए 3-4 फीट मिट्टी खोदी तो एक घड़े में रत्न मिले। दिन में घड़ा मिलते ही उसने उस घड़े को वहीं पूर दिया। रात्रि में आकर घड़ा निकाल ले गया। उसमें से एक रत्न लेकर कुछ दिनों बाद वह पास के सरैया गाँव में गया जहाँ उस रत्न के उसे चार हजार रुपये मिले। उसके बाद उसने कलकत्ता में दूसरा रत्न बेचा तो उसे 80 हजार रुपये मिले। फिर कुछ दिनों बाद दिल्ली में उसने तीसरा रत्न बेचा जो चार लाख रुपये में बिका। उसे यह घड़ा 2005 ई. में मिला और तीन वर्ष में आज वह बहुत बड़ा आदमी बन गया है। बीच में वासियों ने इस आश्चर्य को देखकर उससे जानना चाहा। उसने कुछ लोगों को यह बात बता भी दी। कभी कोई थाना प्रभारी उसे पकड़ने आया तो उसने उसे भी वह रत्न देकर अपने को बचा लिया। कुछ ग्रामीण जनों को भी उसने रत्न दिए हैं।

एक ओर जहाँ वैशाली, आम्रपाली के कारण पाटलिपुत्र के राजा अजातशत्रु से कई बार जीती गयी, विध्वंस की गयी और आतंक का केन्द्र बनी रही वहीं दूसरी ओर सिद्धार्थ का यह वासोकुण्ड आततायियों से सुरक्षित रहा है। यहाँ के ग्रामीण लोग अतिशय मानते हैं कि यहाँ कभी प्राकृतिक प्रकोप भी नहीं हुआ है। सर्वत्र शांति और सुखद वातावरण है।

पास में एक क्षत्रिय ग्राम है। दंत कथा है कि राजा सिद्धार्थ का राज्य विस्तार उसी क्षत्रिय गाँव की ओर पूर्वी क्षेत्र में हिमालय की तराई तक था। राजा चेटक उनके साले थे इसलिए यहीं पास में आकर सिद्धार्थ बस गये थे। वैशाली और वासोकुण्ड को विभाजित करने वाली एक नदी थी जो गण्डक नदी के नाम से जानी जाती है। आज उस नदी की धारा बदल गयी है। वह नदी अभी भी है। लोग कहते हैं कि वह पहले गंगा नदी के नाम से ही जानी जाती थी। भौगोलिक स्थिति को देखते हुए प्रतीत होता है कि वासोकुण्ड एक प्रसिद्ध गढ़ था, जिसके चारों ओर से जाने-आने का स्थान था। आज भी वासोकुण्ड के चारों ओर सड़क-पथ है।

वासोकुण्ड की इस धरती में अभी भी भगवान महावीर के पवित्र जीवन की सुवास है। यह सुवास काल के प्रभाव से कहीं विलुप्त न हो जाये इसलिए यह सब उल्लेख किया है।

डॉ. नीलम जैन, पुणे समाज रत्न उपाधि से सम्मानित

जुगुल (कर्नाटक) ६मार्च २०१४, पूज्य मुनि श्री चिन्मयसागर जी महाराज की जन्म स्थली में सम्पन्न विश्व का सर्वाधिक वृहत् ११ दिन (२६ फरवरी से ६ मार्च) तक श्री मज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव एवं विश्वशान्ति महायज्ञ अतिभव्यता एवं ऐतिहासिक आयोजनो के मध्य सम्पन्न हुआ। देश विदेश के अनेक प्रसिद्ध धर्म गुरू , श्रेष्ठी, विद्वान ,राजनेता एवं समाजसेवी उपस्थित रहे। केवलज्ञान कल्याणक के दिन डा० नीलम जैन सम्पादिका 'दिव्य देशना " को पूज्य मुनिश्री के पावन सान्निध्य में कर्नाटकसरकार केअनेकमन्त्रियों एवं उपस्थित लाखों श्रद्धालुओं केसम्मुख श्री चिन्मय सागर चेरिटेबल ट्रस्ट (पंजी) एवं सकल दि० जैन समाज जुगुल (कर्नाटक) द्वारा समाज रत्न की उपाधि से विभूषित किया गया। पूज्य मुनि श्री ने डा० नीलम जैन के विगत २५ वर्षों से धर्म एवं समाज के प्रति उनके समपर्ण की प्रशंसा की

डा० ममता जैन (पुणे).

प्रवेश सूचना

कोटा (राजस्थान) शिक्षा नगरी के नाम से प्रसिद्ध कोटा शहर में मुनि पुंगव 108 श्री सुधासागर जी महाराज की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से सन् 2001 में संस्थापित महाकवि आचार्यश्री विद्यासागर छात्रावास, दादाबाड़ी, कोटा (राज.) में 01 मार्च, 2014 से प्रवेश प्रारम्भ किया जा रहा है। अतः छात्रों से आवेदन आमंत्रित किये जा रहे हैं। इस छात्रावास में इंजीनियरिंग और मेडिकल की कोचिंग करने वाले छात्रों को आवासीय सुविधाओं के साथ भोजनादि की समुचित सुविधायें प्रदान की जाती हैं।

छात्रावास की वेबसाइट

www.vidyasagarchatrawas.weebly.com और फेसबुक आईडी facebook.com/vidyasagar.chatrawas पर आवेदन पत्र, नियमावली एवं सीट उपलब्धता की जानकारी उपलब्ध है। नियमावली और आवेदन पत्र को छात्र अच्छी तरह से पढ़कर डाउनलोड कर रजिस्टर्ड डाक / कोरियर के माध्यम से भेज कर प्रवेश हेतु आवेदन कर सकते हैं।

कैलाशचन्द सर्राफ — अध्यक्ष

हुकुम जैन 'काका' — निदेशक

महाकवि आचार्य विद्यासागर छात्रावास, दादावाड़ी, कोटा (राज.) फोन : 0744-2505050,

मो.09414184618/08696963974

तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जैन द्वारा राजस्थान प्रांत के श्री पदमपुरा, चूलगिरि, आवां, महेन्द्रवास, सांखना एवं सांगानेर आदि क्षेत्रों का दौरा एवं स्थानीय कार्यकर्ताओं के साथ चर्चा

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र संघीजी, सांगानेर, जयपुर में आयोजित तीर्थक्षेत्र कमेटी राजस्थान अंचल की सभा को संबोधित करते हुए तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जैन। सभा की झलकियां

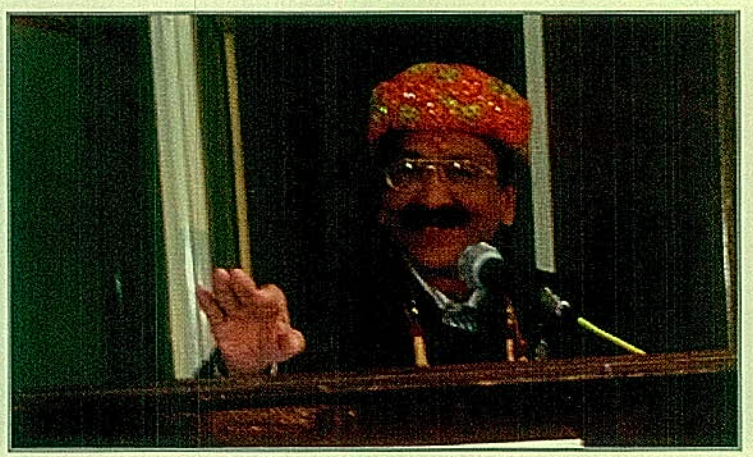

श्री दिगम्बर जैन मंदिर सावला बाबा, अंबर, जयपुर के संयोजक श्री महेन्द्र पाटनी एवं मंत्री श्री जयकुमार जैन आदि के साथ चर्चा-विचारणा करते हुए तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जैन। सावला बाबा मंदिर के पदाधिकारियों द्वारा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जैन के सम्मान की झलकियाँ

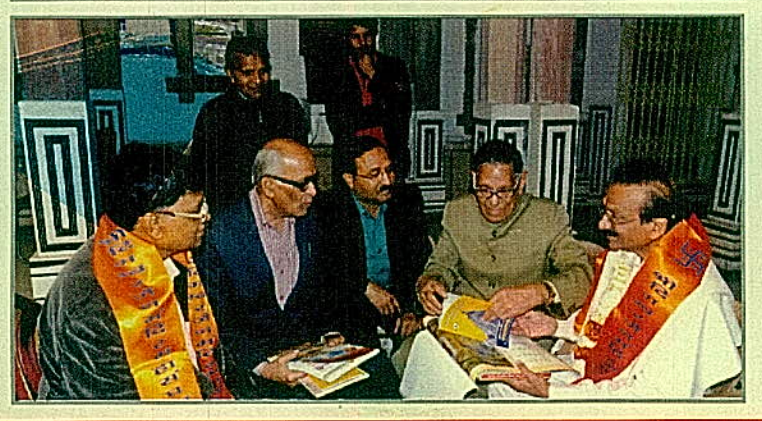

वाणी को वीणा बनायें, बाण नहीं।

श्री दिगम्बर जैन मंदिर, आवां के दर्शन-पूजन की झलकियाँ। आवां मंदिर के अध्यक्ष श्री कैलाशचन्द जैन एवं अन्य पदाधिकारियों के साथ तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जैन।

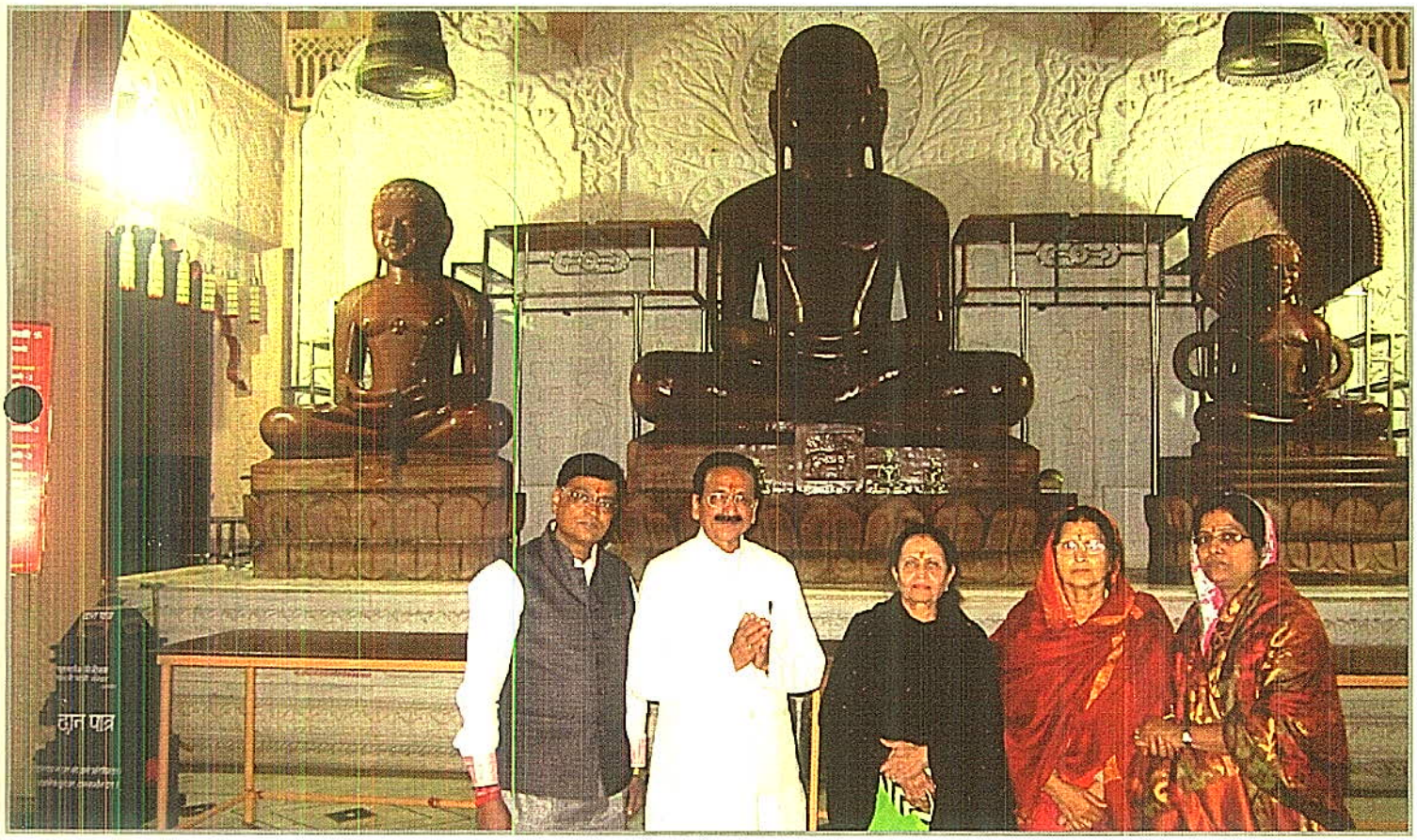

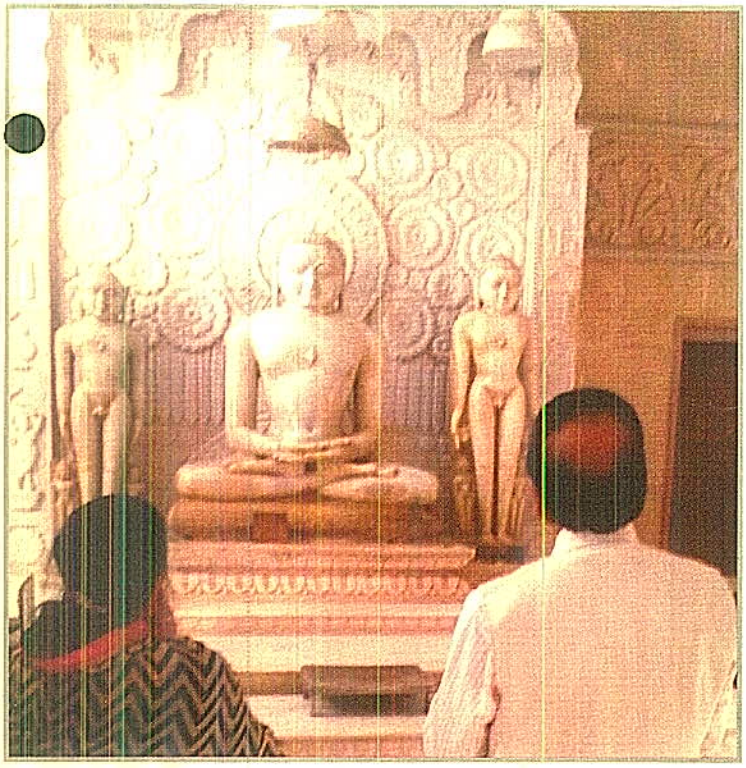

बोलना स्वर्ण है किन्तु मौन स्वर्ण से निर्मित आभूषण है।

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पदमपुरा के अध्यक्ष श्री सुधीर जैन एवं मंत्री श्री ज्ञानचन्द जी झांझरी एवं अन्य पदाधिकारियों के साथ चर्चा करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जैन।

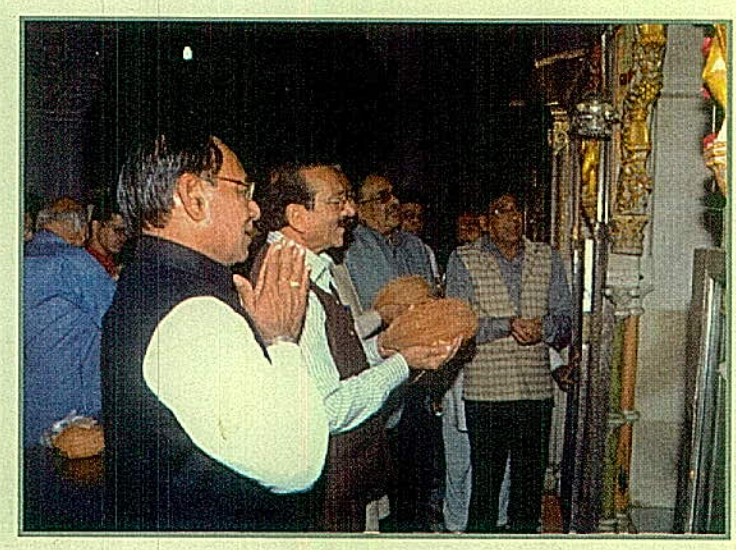

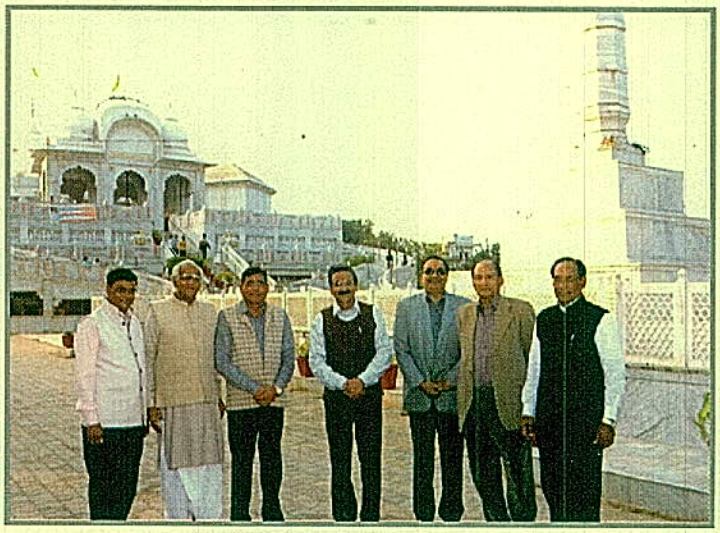

प्रत्येक जैन को अपने नाम के साथ 'जैन' अवश्य लिखना चाहिये

दिगम्बर जैन महासमिति के पूर्व अध्यक्ष श्री विवेक काला, जयपुर के साथ राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जैन एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सलम जैन, श्रीमती अंजू जैन तथा राजस्थान अंचल के मंत्री श्री रवीन्द्र जैन 'बज' एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती पूजा जैन 'बज'।

अतिशयक्षेत्र श्री महावीरजी के सम्माननीय ट्रस्टियों के साथ तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जैन (मध्य में)

श्री महावीर दिगम्बर जैन पब्लिक स्कूल में श्री नरेश सेठी एवं तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष

महेन्दवास क्षेत्र पर स्वागत

धर्म को जानने वाला व्यक्ति पुण्य से कमाता है और पुण्य के क्षेत्र में लगाता है।

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र चूलगिरि के संरक्षक श्री प्रवीणचन्द्र छाबड़ा, अध्यक्ष श्री बलभद्र जैन, वरिष्ठ सदस्य श्री सुदीप सोनी, श्री राजकुमार कोठ्यारी आदि पदाधिकारियों द्वारा तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जैन का स्वागत एवं सम्मान समारोह की झलकियाँ।

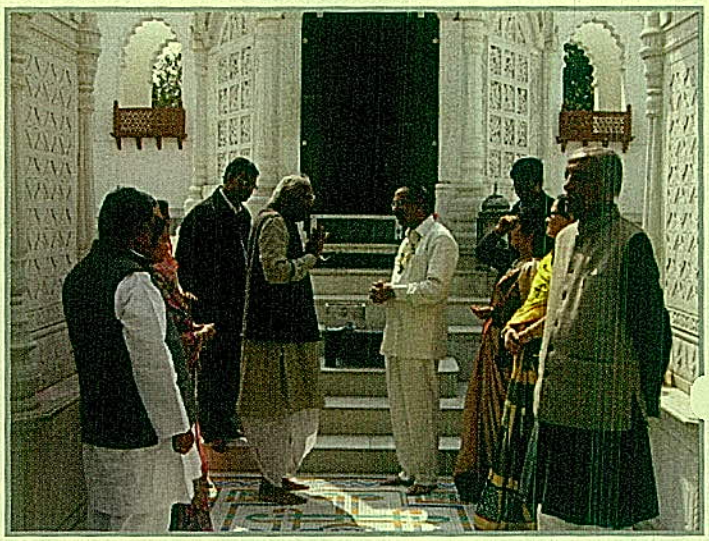

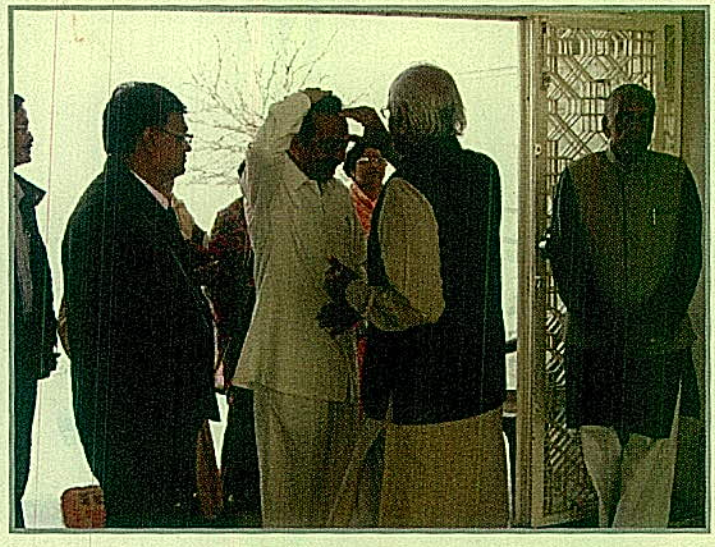

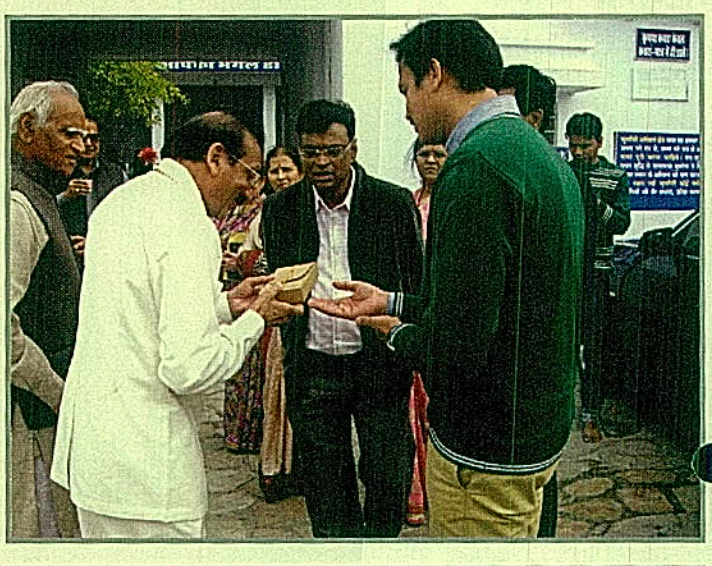

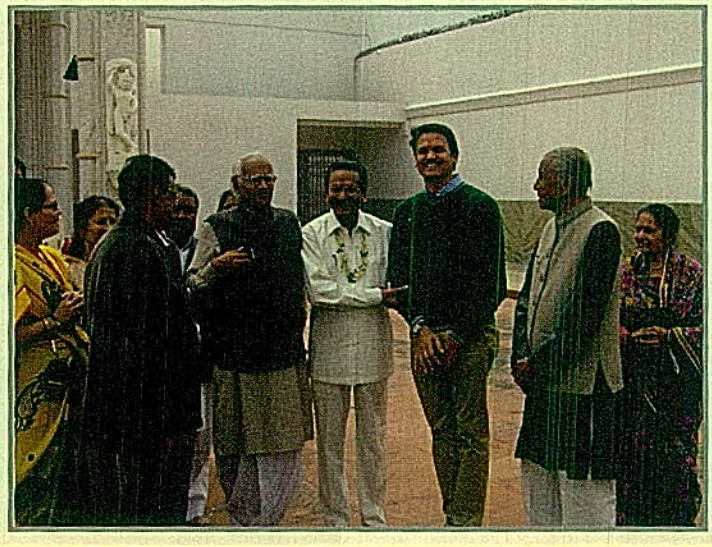

जिन धर्म गुणों की उपासना करता है व्यक्ति की नहीं ।

श्री ऋषभदेव (केशरियाजी) मंदिर के अध्यक्ष श्री केशवलाल जी वाणावत एवं श्री वसंतलाल मेहता के साथ चर्चा करते हुए तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जैन एवं राजस्थान अंचल के मंत्री श्री रवीन्द्र बजा

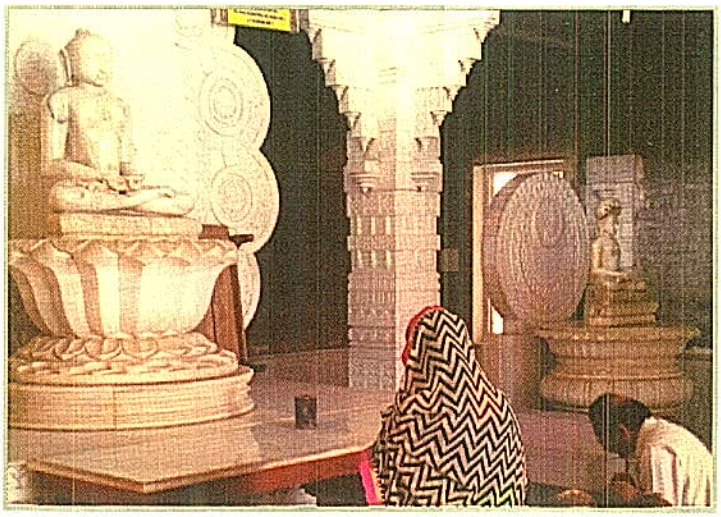

श्री टोंक मंदिरजी में दर्शन करते हुए अध्यक्ष श्री सुधीर जैन

श्री टोंक क्षेत्र के अध्यक्ष श्री श्यामलालजी जैन राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जैन का स्वागत सम्मान करते हुए

श्री सांखनाजी मंदिर में दर्शन करते हुए अध्यक्ष श्री सुधीर जैन

श्री सांखनाजी क्षेत्र के अध्यक्ष श्री प्रकाशजी सोनी राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुधीर जैन एवं श्री रविन्द्र बज से चर्चा करते हुए

धर्म केवल मंदिर में हीं, मूक प्राणियों के ऊपर दया करना भी धर्म है।

संस्कृत विद्यार्थी के लिए डॉ. सुखनन्दन जैन स्मृति छात्रवृत्ति योजना

बड़ौत - दिगम्बर जैन महाविद्यालय के संस्कृत विभाग के सौजन्य से एक पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता श्री धनकुमार जैन ने की। संयुक्त सचिव श्री धनेन्द्र कुमार जैन ने डॉ. सुखनन्दन जैन की समाज व कॉलेज के उत्थान में उनकी उपयोगिता पर प्रकाश डाला। समाजसेवी श्री सुखमाल चन्द जैन ने डॉ. जैन की जैन धर्म के प्रति समर्पण तथा उनके परिवार के सदस्यों का समाज के प्रति उत्तरदायित्व निभाने की तत्परता की सराहना की। प्रधानाचार्य श्रीमती उमा गुप्ता द्वारा डॉ. सुखनंदन जी के व्यक्तित्व को अपने जीवन का आदर्श बताते हुए कहा कि मैं आज जिस पद पर प्रतिष्ठित हूँ- यह उनकी ही प्रेरणा का सुफल है। विभागाध्यक्ष डॉ. श्रेयांस कुमार जैन ने पुरस्कार की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए डॉ. जैन के आदर्शों को सभी छात्र-छात्राओं को प्रेरणा लेने के लिए उत्साहित किया।

इस अवसर पर डॉ. जैन के सुपुत्र श्री अरुण कुमार जैन ने पुरस्कार का उद्देश्य बताते हुए कहा कि शिक्षा का जितना उपभोग करेंगे उतना ही यह बढ़ेगी- इसी से विवेक जागृत होता है।

कार्यक्रम में कॉलेज के संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. सुखनंदन जैन की स्मृति में कालेज की एम.ए.द्वितीय वर्ष की छात्रा कु. खुशबू, एम.ए. प्रथम वर्ष की छात्रा कु. विभूति शर्मा को प्रशस्ति पत्र, शॉल व नकद पुरस्कार प्रदान कर पुरस्कृत किया गया।

- डॉ. श्रेयांश कुमार जैन

अध्यक्ष- संस्कृत विभाग दि.जैन कालेज, बड़ौत

दिगम्बर जैन मंदिर श्री नेमीनाथजी (साँवलाजी) आमेर में मंदिर के गुम्बज पर कलशारोहण व ध्वजारोहण का कार्यक्रम सानन्द सम्पन्न

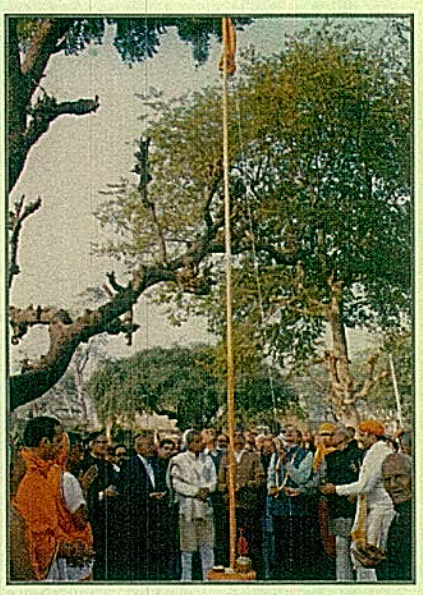

दिगम्बर जैन नसियाँ कीर्ति स्तम्भ, खोर दरवाजा आमेर में दिनांक ४ व ५ फरवरी, २०१४ को मंदिर के गुम्बज पर कलशारोहण व ध्वजारोहण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। दिनांक ४ फरवरी, २०१४ को प्रातः नसियाँ परिसर में भट्टारकों द्वारा रचित हस्तलिखित ग्रन्थों की प्रदर्शनी लगाई गई। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन माननीय श्री नरेन्द्र कुमार जी जैन, मुख्य न्यायाधीश सिक्किम, उच्च न्यायालय द्वारा किया गया। यह प्रदर्शनी जैनविद्या संस्थान, दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी एवं श्री दिगम्बर जैन मंदिर महासंघ द्वारा संयुक्त रूप से लगाई गई। इस दिन बसंत पंचमी थी जो कि आचार्य कुन्दकुन्द का जन्म दिवस है।

दिनांक ५ फरवरी, २०१४ को प्रातः दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी के अध्यक्ष माननीय श्री नगेन्द्र कुमार जी जैन पूर्व मुख्य न्यायाधिपति मद्रास एवं कर्नाटक उच्च न्यायालय द्वारा झण्डारोहण किया गया।

इस अवसर पर दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी के पूर्व अध्यक्ष श्री नरेश कुमार जी सेठी, उपाध्यक्ष श्री राजकुमार जी काला, श्री नरेन्द्र कुमार जी पाटनी, श्री बलभद्रकुमार जी जैन, श्री नवीन कुमार जी बज, डॉ. कमलचन्द जी सोगानी, श्री सुधांशु जी कासलीवाल, श्री सुभाषचन्द जी जैन आदि उपस्थित थे। विधानाचार्य पं. मुकेश जी जैन 'मधुर' शास्त्री श्री महावीरजी थे।

कीर्ति स्तम्भ की नसियाँ में सम्पूर्ण भारतवर्ष में विख्यात आमेर की गद्दी के पूज्य भट्टारकों का कीर्ति स्तम्भ है, यह स्तम्भ साढ़े १२ फीट ऊँचा है तथा इसकी गोलाई ४ फीट ७ इंच है, स्तम्भ मकराना का है। इस स्तम्भ के १० भाग किये गये हैं। एक-एक भाग में चारों ओर भट्टारकों की १२-१२ मूर्तियां खड्गासन/पद्मासन उत्कीर्ण है। इसमें खड्गासन के हाथ में कमण्डलु है। इसमें १०१ भट्टारकों की मूर्तियों के सम्वतोल्लेख हैं। इसमें मूल संघ के दिगम्बर आम्नाय के भट्टारकों का विवरण है।

- महेन्द्र कुमार पाटनी, जयपुर

जैन दर्शन में अधर्म मिटाना होली है

- श्री योगेन्द्र दिवाकर, सतना

सम्यक दर्शन, ज्ञान, चारित्र आत्म धर्म है।
आत्म धर्म की आध्यात्मिक रंगोली है।।
मिथ्या दर्शन, मिथ्या ज्ञान, मिथ्या चरित्र अधर्म है।
जैन दर्शन में अधर्म मिटाना होली है।।
दर्शन तीरथ के समान है।
ज्ञान की गुलाल लगाना है।।
चारित्र की फगुआ ऐसी है।
जिससे शिवत्व को पाना है।।

घोषणा पत्र

प्रकाशन अवधि	: मासिक
प्रकाशक/मुद्रक/संपादक	: उमानाथ रामअजोर दुबे
राष्ट्रीयता	: भारतीय
मालिक	: भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई - 400 004

द्वारा त्रिमूर्ति प्रिंटर्स, 5 वी.पी.रोड, सी.पी.टैंक, मुंबई - 400 004 से मुद्रित कर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई- 400 004 से प्रकाशित.

मैं एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार उपर्युक्त विवरण सत्य है.

- उमानाथ रामअजोर दुबे, संपादक

परलोक गमन के समय पैसा नहीं पुण्य काम आता है।

शिक्षा सुधारक सृजन शिलान्यास समारोह
प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ रामटेक

संतों के सान्निध्य में दो दिवसीय प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ के भव्य शिलान्यास समारोह में उमड़ा जन सैलाव

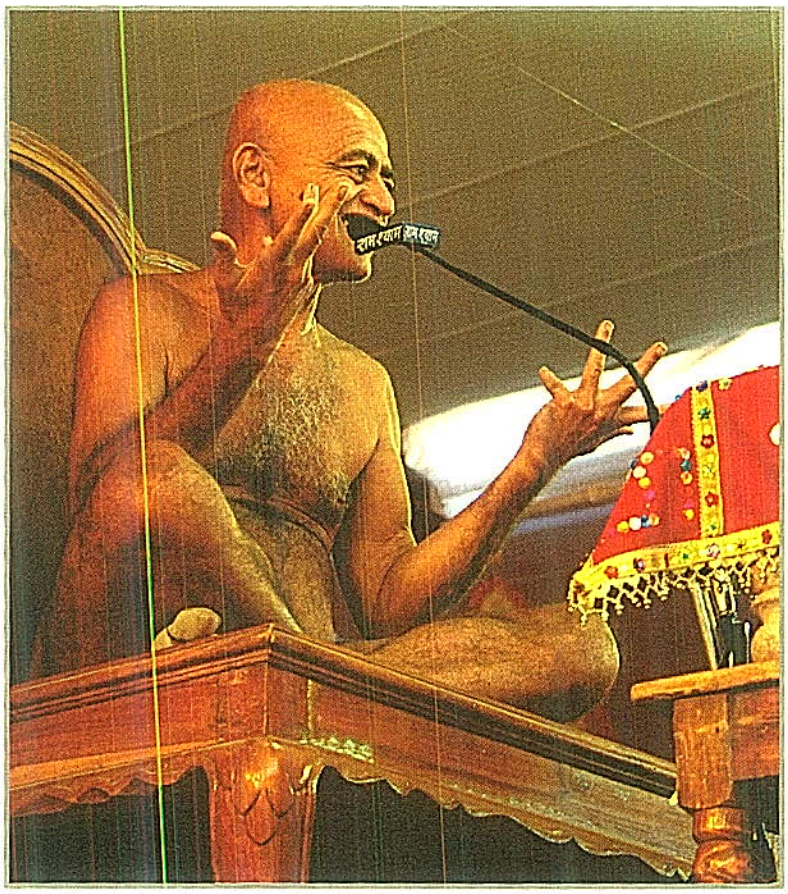

नागपुर, रामटेक तीर्थक्षेत्र एक नया इतिहास रच गया। कौन जानता था कि प्रसिद्ध जैन मन्दिर परिसर में धर्म और संस्कृति के क्षेत्र में मील का पत्थर सिद्ध होने वाले किसी कन्या आवासीय विद्यालय का शिलान्यास होगा? यह संतो की महिमा का ही प्रभाव है। सन् 2006 में **संत शिरोमणि आचार्य परमेष्ठी 108 श्री विद्यासागर जी महामुनिराज** की प्रेरणा व सान्निध्य से इसकी बुनियाद जबलपुर में रखी गई, आशातीत सफलता के परिणामस्वरूप ड़ोगरगढ (छ. ग.) में और विगत दिनों रामटेक में इसका शिलान्यास हुआ, प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ विश्व का एकमात्र विद्यालय है जहां सभी शिक्षिकाएँ बालब्रह्मचारिणी है साथ ही प्रतिभा सम्पन पीएचडी, एम.फिल., डॉक्टर, इंजीनियर, एम.बी.ए., एम.सी.ए., एम.पोत्र में अपी.एड., एम. एस.सी., एम.ए., प्रशासनिक अधिकारी पद त्याग कर शिक्षा के धनी निःशुल्क सेवाएं प्रदान कर रही है। प्रतिभास्थली ज्ञानोदय विद्यापीठ का उद्देश्य आधुनिकता की इस चकाचौंध में लुप्त होती भारतीय संस्कृति और संस्कारों का उन्नयन करने हेतु गुरूकुल परम्परा को पुनः स्थापित करना है, जिससे विद्यार्थी शिक्षा के सही अर्थ को ग्रहण कर सके।

संत शिरोमणि आचार्य परमेष्ठी 108 श्री विद्यासागर जी महामुनिराज एवं आर्यिका रत्न 105 श्री आदर्शमति माता जी और 70 साधु–साध्वियों सहित हजारों श्रद्धालुओं की उपस्थिति में शिलान्यास पूजन प्रतिष्ठाचार्य ब्र. विनयभैया के मार्गदर्शन में किया गया।

कार्यक्रम में जबलपुर व ड़ोगरगढ़ की 100 से भी अधिक छात्राओं द्वारा देश भक्ति से परिपूर्ण रोचक कार्यक्रम की सरस प्रस्तुति ने उपस्थितों को भाव विभोर कर दिया। नगर सेवक दयाशंकर तिवारी ने कार्यक्रम को संबोधित किया ।

इस अवसर पर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामंत्री श्री पंकज जैन, मंत्री श्री खुशाल जैन, चेयरमेन श्री संजय मैक्स इंदौर, दयोदय महासंघ के अध्यक्ष श्री प्रभात जैन मुंबई एवं शान्ति–दुग्ध–धारा के संचालक श्री अरविन्द जैन, श्री मनीष नायक, श्री आनंद सिंघई, देवेन्द्र सिंघई, किशोर जैन भी उपस्थित थे। रामटेक क्षेत्र के अध्यक्ष श्री सनत जैन, श्री मनीष जैन, श्री मनोज जैन साथ ही अंतर्गत संस्थाओं ने सफलतार्थ अथक प्रयास किया और **कक्षा–4th,5th,6th** में प्रवेश की जानकारी प्रदान की।

शिलान्यास समारोह के प्रवचनांश

आचार्य श्री जी ने जनसमुदाय को संबोधित करते हुए कहा कि आज युग इतना आगे बढ़ गया है कि अब ग्रंथ की पहचान समाप्त हो जायेगी। रोबोट, परिकलन यंत्र आदि के आने से केवल बुद्धि का प्रयोग हो रहा है,आचरण का नहीं। आ.....चरण अर्थात् चरणों (हाथ–पैरों) की ओर दृष्टिपात नहीं होता। स्वाध्याय करिये और उसका वर्ग प्रयोग करिये। दो घंटे में पढ़े

धन से सुविधायें मिल सकती हैं सुख नहीं।

गये विचारों में दो का गुणा कीजिये सोचिये अब क्या मिलेगा ? वह विचार तो चार घंटे का हो जायेगा। मूलतः किसी विषय को पढ़ने की अपेक्षा सुनने में ज्यादा एकाग्रता रहती है।

वॉट इज दिस प्रतीकात्मक कविता यह कहती है कि हमारे बच्चे आँग्ल भाषा जानते हैं लेकिन हमारे पौराणिक ग्रन्थों और संस्कृति को देखकर कहते हैं– **वॉट इज दिस** अर्थात् आप अपने ही सामने अपनी संतानो की बुद्धि भ्रष्ट कर रहे हैं।

धर्म के माध्यम से श्वान यदि अच्छा काम करता है तो वह जी.ओ.डी.(गॉड) अर्थात् देव हो जाता हैं। और देव यदि गलत काम करता है तो वह डी.ओ.जी.(डॉग) अर्थात् श्वान हो जाता है क्योंकि यह संसारी प्राणी अनुकूलता व प्रतिकूलता का आदि बना हुआ है उसके उपरांत भी वह बहुत कुछ काम कर सकता है।

आज हम महापुरूषों को केवल पंद्रह अगस्त, छब्बीस जनवरी और कुछ तिथियों को ही याद करते है। महापुरूष बीज बो देते है और खेती होती जानी चाहिये आप लोगों ने उनका क्या लाभ लिया? उनके उद्बोधन आज भी झकझोर देते है। आज गाँधी जी के नाम से बहुत कुछ पाने के बाद भी हम उनके साथ कोई संबंध स्थापित नहीं कर पाते हैं अर्थात् कथनी करनी में पूर्ण अंतर आ चुका है। नाम लेकर एकमात्र संतुष्ट हो जाना ठीक नहीं फिर शोध का क्या अभिप्राय। कुछ व्यक्ति ही महापुरूषों का अनुशरण कर पाते हैं, शेष सभी इस विदेशी भाषा के माध्यम से धोखा के अलावा और कुछ ना देंगें इस प्रकार हमारी बुद्धि ही प्राणलेवा हो सकती है।

हिन्दी दिवस क्यों और किसलिए इसकी शुरूवात हुई तो इसमें हमारी बुद्धि काम नहीं करती। आराम नहीं, अब देखो और थोड़ा सोचो हम अपने आदर्शों की ओर क्यों नहीं जा रहे हैं ? आदर्श अर्थात् दर्पण के सामने अभिमुख होना चाहिए उन्मुख नहीं, विमुख नहीं, तभी प्रमुखता से खड़ें हो सकोगे। आदर्श के सामने यदि आप चले जाते हैं तो आपका क्या कर्त्तव्य है ? आगे का भविष्य क्या है ? बुद्धि के सामने आये बिना नहीं रह सकता। गांधी जी का नाम लेते ही चित्र के सामने **हओ हओ** तो कह दिया जाता है फिर अब **हाऊ हाऊ** कहते है। अब गांधी क्या हैं– **इट इज गांधी**। आने वाले समय में **हू हेज** गांधी हो जायेगा।

जहाँ यंत्र व तंत्र काम नहीं करते वहाँ मंत्र अर्थात् शिक्षा या बुद्धि जो संस्कारों के साथ दी जाती है, स्मरण करने से वह पूर्ण हो जाती है। यंत्र (रोबोट) इत्यादि के गलत बटन दब जाने पर वे स्वयं की ही गर्दन पकड़ लेते हैं। जो व्यक्ति कृतज्ञता की पहचान नहीं करता उसके लिये सब बेकार है क्योंकि कितने ही करोड़पति अरबपति बने रहो इससे कुछ नहीं होने वाला यदि आपने संतान को संस्कार नहीं दिये। बुद्धि का प्रयोग ज्यादा नहीं करना चाहिये। जिनसे हमें बुद्धि व संस्कार मिले हैं, उन्हें याद रखना चाहिए। **याद** अर्थात् **दया** हमारे पूर्वजों के प्रति होनी चाहिये। लिखने की अपेक्षा वह विषय दो बार याद करते हैं तो वह अपने आप ही पच जाता है। क्योंकि **अनाभ्यासे विषम विद्या अर्जीणे विद्या अपि विषम्**। अर्थात् अभ्यास न करने से अन्न भी विष का रूप ले लेता है। शिक्षा महान अनुभवी व्यक्तियों के माध्यम से हम लोगों को उपलब्ध हुई जिन्होंने प्रत्येक पदार्थ के बारे में अनुभव के साथ उसका क्या गुण धर्म है,ये याद रखना अनिवार्य है नहीं तो विज्ञान के युग में हमारी मृत्यु निश्चित है। ऐसा विज्ञान जो मृत्यु का कारण बने उससे बहुत दूर रहना चाहिए । सम्यग्ज्ञान ही हमारे लिए उपयोगी है। उतना ही ज्ञान हमें प्राप्त कर लेना चाहिए जिनके द्वारा निश्चित दिशाबोध प्राप्त हो।

– संजय जैन 'मैक्स', इंदौर

क्रिया सहित धर्म कभी निष्फल नहीं होता।

अंचलीय समिति के अध्यक्षों के चुनाव

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की पदाधिकारी परिषद की दिनांक 22 दिसम्बर, 2014 को दिल्ली में सम्पन्न हुई बैठक में अंचलीय समिति के अध्यक्षों के चुनावके बारे में यह निर्णय लिया गया था कि आगामी 2-3 महीनो के अन्दर सभी अंचलीय समिति के अध्यक्षों के चुनाव सम्पन्न हो जाय, उसके लिए प्रयास किया जाय तथा सभी अंचलीय समिति के अध्यक्षों को इस आशय का पत्र लिखकर उनसे अधिवेशन की तिथि एवं स्थान के सुझाव मंगाकर राष्ट्रीय अध्यक्ष, महामंत्री एवं अंचल के अध्यक्ष मिलकर निश्चित करें, जिससे तत्संबंधी सूचना केन्द्रीय कार्यालय से भिजवाई जा सके।

उक्त आलोक में यह जानकारी देते हुए हर्ष हो रहा है कि केन्द्रीय कार्यालय में निम्नलिखित दो अंचलों के हुए अध्यक्षों के चुनाव की रिपोर्ट प्राप्त हो गई है तथा राजस्थान, मध्यप्रदेश प्रान्त एवं गुजरात प्रांत के अध्यक्षों के चुनाव की सूचनाएं भी भेजी जा चुकी है। चुनाव की रिपोर्ट प्राप्त होने पर आगामी अंक में प्रकाशित किया जावेगा।

तमिलनाडु, केरल, आंध्र प्रदेश एवं पांडिचेरी अंचल के अध्यक्ष का चुनाव
श्री कमल कुमार जैन (ठोलिया), चेन्नई अध्यक्ष निर्वाचित

निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार दिनांक 9 फरवरी, 2014 को भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी तमिलनाडु, केरल, आंध्र प्रदेश एवं पांडिचेरी अंचल के अध्यक्ष के चुनाव हेतु आम सभा अतिशय क्षेत्र अरिहंतगिरि तिरुमलै (तमिलनाडु) में स्वस्तिश्री भट्टारक धवलकीर्ति स्वामी जी के सान्निध्य में आयोजित की गई, जिसमें सदस्यों के अतिरिक्त नैनार जैन समाज के गणमान्य महानुभावों की उपस्थिति में अधिवेशन की कार्यवाही संपन्न हुई।

अध्यक्ष पद के लिए केवल एक नामांकन पत्र श्री कमल कुमार जैन (ठोलिया) सुपुत्र स्व.श्री मदनलालजी जैन का आया, जिसका निरीक्षण चुनाव अधिकारी श्री महेन्द्र कुमार धाकड़ा द्वारा किया गया जो सही पाया। पश्चात उन्होंने श्री कमल कुमार जी जैन (ठोलिया) चेन्नई को आगामी पांच वर्षों के लिए अध्यक्ष घोषित किया।

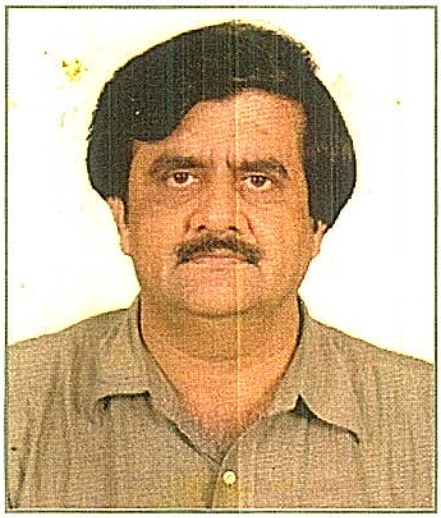

समाज के वरिष्ठ सदस्यों द्वारा आगंतुक मेहमानों में श्री एम.के.जैन, चेन्नई एवं नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री कमल कुमार जैन (ठोलिया) का सम्मान किया गया। इस अवसर पर अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये गये थे।

कर्नाटक अंचल के अध्यक्ष का चुनाव

निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार दिनांक 2 मार्च, 2014 को भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी कर्नाटक अंचल के अध्यक्ष के चुनाव हेतु आम सभा श्री दिगम्बर जैन मठ, श्रवणबेलगोला में स्वस्तिश्री कर्मयोगी परमपूज्य भट्टारक चारुकीर्ति महास्वामी जी के सान्निध्य में आयोजित की गई। सभा में सदस्यों एवं स्थानीय जैन समाज के गणमान्य महानुभावों की उपस्थिति में अधिवेशन की कार्यवाही संपन्न हुई।

अध्यक्ष पद के लिए केवल एक नामांकन पत्र श्री डी.आर.शाह, इंडी का आया जिसका निरीक्षण चुनाव अधिकारी श्री विनोद दोड्डनावर, बेलगांव ने किया। नामांकन पत्र का निरीक्षण करने पर सही पाया गया। पश्चात उन्होंने श्री डी.आर.शाह, इंडी को आगामी पाँच वर्षों के लिए अध्यक्ष घोषित किया। इस अवसर पर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से चुनाव पर्यवेक्षक के रूप में तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय मंत्री श्री विनोद बाकलीवाल, मैसूर सभा में उपस्थित थे।

पाप से अर्जित धन पापों में खर्च होता है, अन्याय से अर्जित धन, अन्याय के कार्यों में खर्च होता है।

श्री भरत क्षेत्र पावापुरी जैन मंदिर में मूलनायक 1008 श्री आदिनाथ भगवान का महामस्तकाभिषेक सानन्द सम्पन्न

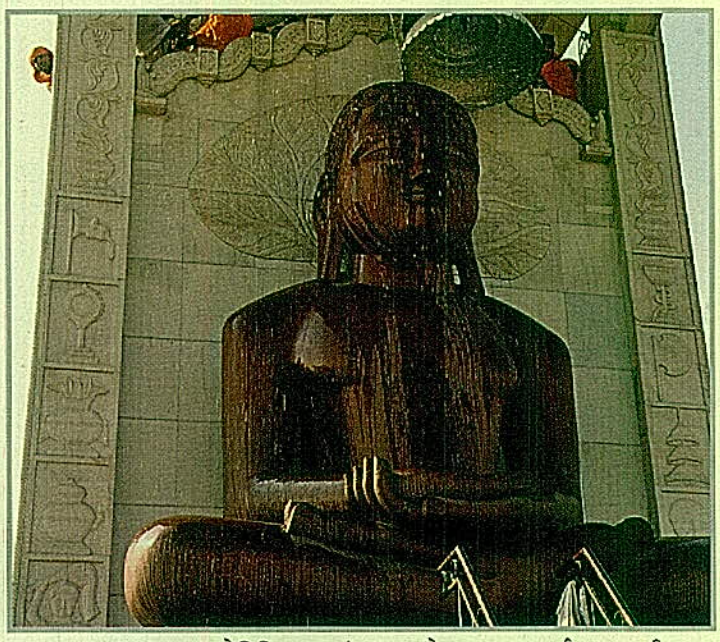

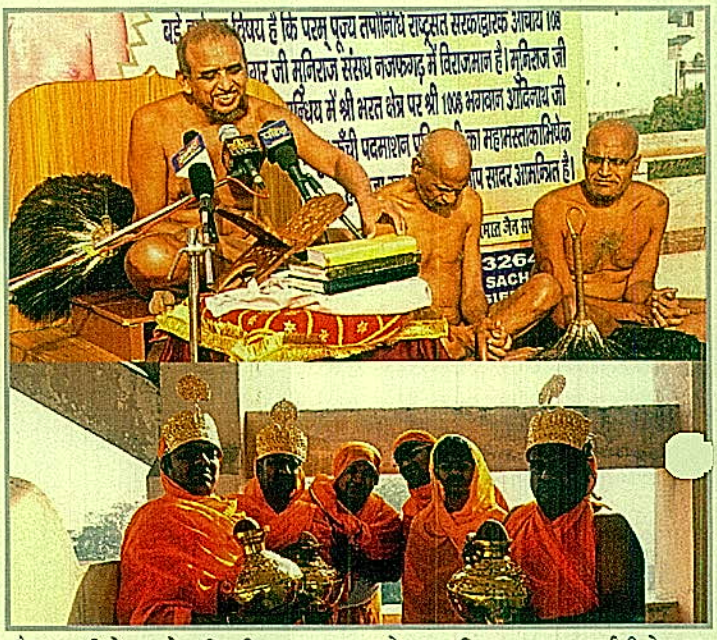

परम पूज्य तपोनिधि, राष्ट्रसंत, सराकोद्धारक आचार्य 108 श्री ज्ञान सागरजी महाराज के पावन सान्निध्य में मूलनायक 1008 श्री आदिनाथ भगवान का महामस्तकाभिषेक श्री भरत क्षेत्र पावापुरी जैन मंदिर, नई दिल्ली में दिनांक 19 फरवरी, 2014 बुधवार को प्रातः 8.00 बजे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अनेक श्रावकों ने श्री आदिनाथ भगवान का अभिषेक कर पुण्यार्जन किया।

इस शुभ अवसर पर आचार्यश्री ज्ञानसागरजी जी महाराज ने अपने मंगल प्रवचन दिये, उन्होंने जीवंधर स्वामी के चरित्र का वर्णन करते हुए कहा कि हमारी गौरवशाली भारतीय संस्कृति आध्यात्मिक संस्कृति है, कहीं भक्ति को महत्व है तो कहीं ज्ञान को महत्व है। बहिरात्मा से अंतरात्मा बनने की प्रक्रिया, हैवान से इंसान बनने की यात्रा, आत्मा से परमात्मा बनने का लक्ष्य हमारे एक श्रेष्ठ श्रावक एक भारतीय नागरिक होने का प्रमाण है। एक सदाचारी भक्त अपने जीवन में अन्याय अनीति का त्याग करते हुए जो चाहे वो सफलता प्राप्त कर सकता है। भारतीय संस्कृति में जीवन का लक्ष्य परमात्मा बनना है किन्तु जैन संस्कृति हमें बताती है कि हम कैसे संसार बंधन से मुक्त होकर, अष्ट कर्मों के बंधन से मुक्त होकर पूर्ण पवित्र आत्मा बन सके। आचार्यश्री ने कहा कि इतना उत्साह, इतनी उमंग जैन समाज के बच्चों, युवा, वृद्ध व महिलाओं की प्रशंसनीय है।

आचार्यश्री ने कहा कि भगवान का मस्तकाभिषेक करना पूरे विश्व की शांति की कामना करना है, भगवान का मस्तकाभिषेक मात्र सफाई के लिये नहीं किया जाता, अपितु अपने कर्मों की सफाई के लिए किया जाता है। देश में सत्य, संयम, शील, सदाचार जितना होगा देश में उतनी ही खुशहाली आयेगी, जीवन में पूर्ण शांति होगी। भगवान के अभिषेक का जो जल होता है वह जल न रहकर गंधोदक बन जाता है और गंधोदक इतना पवित्र व ऊर्जावान होता है कि वह मानव काया को रोगमुक्त, दोष मुक्त व अष्ट कर्मों से छुटकारा दिलाता है जैसे मैनासुन्दरी ने अपने पति श्रीपाल का कुष्ठ रोग दूर किया था। आचार्यश्री ने कहा कि गंधोदक को हमेशा चम्मच से लेना चाहिए। कभी भी उसमें हाथ नहीं डालना चाहिए। गंधोदक को हमेशा नाभि से ऊपर लगाना चाहिए व किसी भी घाव या चोट पर नहीं लगाना चाहिए। गंधोदक लगाने से समस्त दुःखों से छुटकारा मिलता है। आचार्यश्री ने भगवान की भक्ति के महत्व को बताते हुए कहा कि वीतराग प्रभु की भक्ति समस्त दुःखों को सुखों में परिवर्तित कर देती है और मोक्ष मार्ग की ओर प्रशस्त करती है।

आचार्यश्री ने कहा कि टीवी देखने से आँखों की रोशनी कम होती है और परमात्मा के दर्शन से आँखों की रोशनी बढ़ती है। महाराज जी ने कालसर्प दोष व वास्तु शास्त्र का उल्लेख करते हुए कहा कि यह सभी बातें लोगों भ्रमित करती है और जीवन में कई प्रकार के संदेह होने से अशांति का कारण हो सकता है। परमात्मा की भक्ति करने से सभी कार्यों में सफलता मिल सकती है।

आचार्यश्री ने कहा कि श्री भरत क्षेत्र की रचना दिल्ली की अद्वितीय रचना है, बहुत ही सुन्दर धार्मिक क्षेत्र है, यहाँ भगवान श्री पार्श्वनाथ की अतिशयकारी प्रतिमा विराजमान है। मूलनायक श्री 1008 आदिनाथ की विशाल पदमासन प्रतिमा, 20 भव्य जिनालय, मानस्तम्भ व 500 वर्षों से भी अधिक प्राचीन श्री जती जी के चरण इस क्षेत्र की विशेषता है।

कार्यक्रम का शुभारम्भ ध्वजारोहण से किया गया। मुख्य कलशों के लिये पात्रों का चयन बोली द्वारा किया गया, जिसमें रतन कलश, स्वर्ण कलश, रजत कलश व शांतिधारा की बोली हुई। कार्यक्रम जैन समाज के प्रधान, महासचिव व कार्यकारिणी समिति के सभी पदाधिकारी की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

- अरुण जैन, लक्ष्मी नगर

धन साधन है साध्य नहीं। जैसे नाव को चलाने के लिए सरोवर में जल।

हीरक जयंती महोत्सव एवं महामस्तकाभिषेक सानन्द सम्पन्न

श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, कालबादेवी, मुंबई की स्थापना के गौरवमय 75 वर्षों की पूर्ति के उपलक्ष्य में परम पूज्य युगल मुनिश्री अमोघकीर्ति जी एवं श्री अमरकीर्ति जी महाराज की प्रेरणा से 8 व 9 फरवरी, 2014 को 'हीरक जयंती महोत्सव एवं महामस्तकाभिषेक' बहुत ही जोश व उल्लास के साथ मनाया गया।

8 फरवरी, 2014 को प्रातः मंदिर जी में नित्य नियम अभिषेक, शांतिधारा की गई तथा इसके पश्चात 150 रजत कलशों से श्री 1008 पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा पर मुनिश्री के द्वारा श्लोक उच्चारण व भगवान की जयकार के साथ अभिषेक पूर्ण हुआ। समाज के सभी मुख्य लोगों ने यह पुण्य लाभ लिया। इसके बाद मुख्य शिखर पर ध्वजा फहराने की विधि आदरणीय पं. दीपक जी के द्वारा व पू. मुनिराज जी के सान्निध्य में बहुत ही जोश के साथ जिनेन्द्र देव के जयकारों के ध्वनि के साथ ध्वजा फहराने का कार्य पूर्ण हुआ।

दोपहर 1.30 बजे से श्री 1008 पार्श्वनाथ समवशरण विधान मंदिर की पहली मंजिल पर रात्रि 8.00 बजे आरती एवं भजन का प्रोग्राम चला जिसमें [illegible]ल से पधारे हुए संगीतकारों ने जान फूंक दी।

दूसरे दिन रविवार 9 फरवरी प्रातः नित्य नियम अभिषेक व मूलनायक प्रतिमा जी पर शांतिधारा का कार्य सम्पूर्ण होने के तुरन्त पश्चात 9 बजे प्रातः चांदी के दो भव्य रथों में श्री जी की प्रतिमाओं को लेकर भव्य रथ यात्रा मंदिर जी से प्रारम्भ हुई। यह भव्य रथ यात्रा गुलालवाड़ी, भुलेश्वर मंदिर से होते हुए विशाल जन समुदाय, मुनिश्री एवं आर्यिका संघ सहित, करीब दो घंटे में मंदिर जी पर समाप्त हुई। पूरे रास्ते में लोगों ने श्रीजी के सामने भाव भरे नृत्य चंवर के साथ किये। इस तरह यह अलौकिक रथ यात्रा 11 बजे मंदिर पहुंचे। वहाँ श्रीजी का जलाभिषेक होने के पश्चात उन्हें यथास्थान विराजमान कर दिया गया। धर्मानुयायी जन समुदाय के लिये महाप्रज्ञ भवन में वात्सल्य भोज की व्यवस्था की गई।

दोपहर 2 बजे से महाप्रज्ञ भवन में ही मुनिश्री एवं गणिनी आर्यिकारत्न शुभमति माताजी के सान्निध्य में सांस्कृतिक एवं हीरक जयंती महोत्सव सभा श्री आर.के.जैन की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ।

सर्वप्रथम भ. 1008 श्री पार्श्वनाथ एवं श्री 108 चा.च.आचार्य शांतिसागरजी के चित्र का अनावरण एवं दीप प्रज्ज्वलन कर सभा प्रारम्भ हुई। इसी के साथ संतों का पाद प्रक्षालन किया गया। पश्चात सांस्कृतिक कार्यक्रम में खार मंदिर द्वारा प्रस्तुत श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर कालबादेवी का निर्माण एवं शेठ श्री गेंदमलजी घासीलालजी का पूरा जीवन प्रतापगढ़ से लेकर मुंबई तक का सफर नाट्य रूप में बहुत ही सुन्दर तरीके से प्रस्तुत कर लोगों का मन मोह लिया। इसी के साथ णमोकार मंत्र पर बहुत ही सुन्दर नृत्य प्रस्तुत किया गया तथा नागदा समाज के बच्चों ने भी सुन्दर नृत्य प्रस्तुत किये। पश्चात समाज के अलग वर्गों से आदरणीया गुणमाला बहिन जवेरी का सम्मान किया गया व उन्हें 'संयम ज्योत्स्ना' की उपाधि से अलंकृत किया गया।

पू. गणिनी आर्यिका शुभमती माताजी के आशीर्वचन के पश्चात युगल मुनिराज द्वारा प्रवचन हुए। प्रवचन में सेठ श्री गेंदमल जी के जीवन एवं परिवार के बारे में बताते हुए गुणमाला बहिन जवेरी के जीवन चरित्र पर प्रसन्नता व्यक्त की। प.पू.अमोघ कीर्ति जी ने चारित्र चक्रवर्ती आचार्य शांतिसागरजी की परिपाटी के आचार्य प.पू. वर्धमान सागरजी महाराज का संदेश, आशीर्वाद एवं शुभकामनाओं का पत्र पढ़कर सुनाया।

अंत में मंदिर ट्रस्ट की ओर से पधारे हुए सभी मुख्य अतिथि एवं धर्मानुरागी लोगों का आभार एवं धन्यवाद के साथ ही मुनिराज की आरती की गई।

विशेष निवेदन

जैन तीर्थ वंदना (मासिक) जैन समाज की एक मात्र प्रतिनिधि पत्रिका है, समाज का दर्पण है। कृपया तीर्थक्षेत्रों से संबंधित महत्वपूर्ण समाचार मुनिराजों के आवागमन क्षेत्र के जीर्णोद्धार तथा क्षेत्र की प्राचीनता से संबंधित लेख/समाचार प्रत्येक माह की 8 तारीख को मुंबई कार्यालय को मिल जाय, ऐसी व्यवस्था करें।

शुभ कामनाओं सहित,

संपादक

प्रेम और वात्सल्य का बंधन, संयम से भी ऊँचा होता है।

परम पूज्य गुजरात संत केसरी आचार्य श्री 108 भरतसागर जी महाराज का समाधि मरण

शुक्रवार दिनांक 7 मार्च 2014 को आचार्य श्री संघ का आगमन बाजे गाजे सहित पुष्पगिरि क्षेत्र पर हुआ। शुद्धी के बाद आचार्य श्री अचेत हो गये तथा सायंकाल 4 बजकर 10 मिनिट पर उनका समाधि मरण हो गया। दूसरे दिन शनिवार दिनांक 8 मार्च 2014 को उनकी वि[illegible] यात्रा करीब दस हजार श्रद्धालुओं के साथ निकाली गई

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार दिवंगत आत्मा को नमन करते हुए उनके शीघ्र मोक्ष प्राप्ति की कामना करता है।

दिगम्बर जैन डॉक्टर फाउण्डेशन एवं रिसर्च सेन्टर मुंबई

मुंबई दिगम्बर जैन डॉक्टर फाउण्डेशन एवं रिसर्च सेन्टर का प्रथम अधिवेशन शांतिसागर हॉल, बोरीवली, मुंबई में सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन में मुंबई व ठाणे से २२० दिगम्बर जैन डॉक्टर्स सम्मिलित हुए। बहुत से डॉक्टर्स अपने विषय में विशेषज्ञ थे, किन्तु दिगम्बर समाज को यह खबर नहीं थी कि अपने समाज में इतने डॉक्टर्स हैं। श्री विपिन एस. मेहता, कांदिवली के अथक परिश्रम से सभी को एक मंच पर लाकर प्रथम सम्मेलन साकार किया।

प्रथम सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ. सुभाष चांदीवाल जैन प्रमुख स्थान पर थे। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि दिगम्बर जैन डॉक्टर फाउण्डेशन सिर्फ एकेडेमिक और पूरा सोश्यल नहीं है किन्तु रिलीजियश, सोशल और एकेडेमिक है। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि हमारा सौभाग्य है कि हमारा जन्म दिगम्बर जैन के परिवार में हुआ है। जैन धर्म साइंटीफिक, निधर्मी और अहिंसा को उद्घोषित करता है एवं सेवा, संगठन और सद्भावना से प्रेरित है। सभी डॉक्टरों को जैन धर्म के माध्यम से बगैर नात-जात भेदभाव समाज की सेवा करने का मौका मिला है वह हमारा सौभाग्य है। सभी डॉक्टरों ने श्री विपिन भाई मेहता की प्रशंसा करते हुए कहा, आप इस संस्था के शिल्पकार हो।

श्री विपिन मेहता ने अपने वक्तव्य में कहा था कि इस संस्था का उद्देश्य मुंबई में जहाँ भी दिगम्बर जैन मंदिर है वहाँ जैन मेडिकल सेन्टर शुरू करने का आयोजन करना चाहिए। मुंबई और ठाणे में चेरिटी हॉस्पिटल खोलने चाहिए। संस्था के द्वारा वाजवी दाम से दवाईयाँ और एम्बुलेन्स की व्यवस्था करनी चा[illegible] डॉक्टर हाउस तथा मेडिकल एजूकेशन के लिए स्कॉलरशिप की व्यवस्था हो[illegible] चाहिए।

डॉ. अजित जैन ने कहा कि हेल्पलाईन बनाना चाहिए जिससे एटीएम की तरह जनता को सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाए। डॉ. सुभाष जैन ने हॉस्पिटल में वेजिटेरियन खाना देने पर जोर रखा था। डॉ. अनुज गांधी ने कहा था कि डॉक्टरों के फोटो के साथ डिरेक्टरी और वेबसाईट बनानी चाहिए। डॉ. राजीव ने ब्लड बैंक और ब्लड केम्प की जरूरत पर जोर दिया था। डॉ. सुरेन्द्र कोटड़िया ने तीन मूर्ति, बोरीवली के बगल की जगह पर हॉस्पिटल बनाने का मार्गदर्शन किया था।

कार्यक्रम का मंगलाचरण पंडित श्री अनिलभाई शाह ने किया। डॉ. सुरेन्द्र कोटड़िया ने दीप प्रज्ज्वलन करके कार्यक्रम की शुरुआत की। इस सम्मेलन में मुख्य अतिथि डॉ. आलोक सिंघई, डॉ. पंकज जे. शाह, डॉ. नितीश शाह, डॉ. निखिल शाह, डॉ. राहुल जैन, डॉ. नितीन जैन और जैन समाज के अनेक प्रतिनिधि शामिल हुए थे।

श्री विपिन मेहता द्वारा डॉ. सुभाष चांदीवाल, डॉ. सुरेन्द्र कोटड़िया और डॉ. नेहा निखिल शह को मोमेन्टो एवं शॉल से बहुमान किया गया। मंच संचालन पूर्विबेन शाह और कौशल मेहता ने किया था। कार्यक्रम के अंत में श्री अरुणभाई वखारिया एवं श्री विपिनभाई मेहता ने सभी का आभार व्यक्त किया।

जहां धर्म रहता है वहां धन अपने आप बरसता है।

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद के अध्यक्ष श्री बलवंतराय जैन, भिलाई का निधन

परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बलवन्तराय जी जैन के दिनांक 24 फरवरी, 2014 को भिलाई में हुए आकस्मिक निधन का समाचार बिजली की तरह पूरे जैन समाज में फैल गया। अलग-अलग स्थानों पर शोक सभाओं का आयोजन कर दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

दिल्ली में नवनिर्मित परिषद के भवन कालकाजी में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। सिद्धांत चक्रवर्ती श्वेत पिच्छाचार्य श्री विद्यानन्दजी मुनिराज ने अपने सान्त्वना संदेश में शुभाशीर्वाद देते हुए कहा कि संसार की स्थिति बहुत विचित्र है। इष्ट वियोग और अनिष्ट संयोग होने पर जीव अनेक प्रकार के संक्लेशयुक्त परिणाम करके दुखी रहता है। ऐसे जीव विरले होते हैं जो ऐसी स्थिति होने पर अपने ज्ञान और विवेक से जागृत रहते है। उन्होंने श्री बलवंतराय जैन को एक धर्मानुरागी भद्र परिणामी बताया और कहा कि उनका परिवार एक आदर्श परिवार के रूप में अपनी पहचान बनाई है। ये परम्पराएं चलती रहें, यही मेरा मंगल आशीर्वाद है। इस अवसर पर साहू अखिलेश जैन, परिषद के महामंत्री श्री अनिल जैन, दिल्ली अग्रवाल समाज के अध्यक्ष श्री चक्रेश जैन, श्री दीपचन्द जैन, श्री स्वराज जैन आदि ने अपनी-अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। जयपुर में एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद राजस्थान प्रदेश की ओर से आयोजित किया गया, जिसमें परिषद के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र कुमार जी ठोलिया ने उनके साथ बिताये प्रसंगों को याद किया। श्री निर्मल गोधा ने भी अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष स.सिंघई श्री सुधीर जैन एवं राष्ट्रीय महामंत्री श्री पंकज जैन ने श्री बलवंतराय जैन के निधन पर गहरा दु:ख प्रकट करते हुए जैन समाज की अपूरणीय क्षति बताया।

श्री यशोधर हेमचन्द जी मोदी नहीं रहे

मुंबई। हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर प्रा.लिमिटेड के संचालक श्री यशोधर मोदी, जिनका 80 वर्ष की आयु में दिनांक 18 फरवरी, 2014 को मुंबई में देहावसान हो गया। श्री मोदी जी सन् 1951 से हिन्दी एवं जैन साहित्य के प्रकाशन में अग्रसर होकर भारत के अनेकों बड़े-बड़े लेखकों जैसे- मुंशी प्रेमचन्द, हजारी प्रसाद द्विवेदी, महावीर प्रसाद द्विवेदी, रामचन्द्र वर्मा, जैनेन्द्र कुमार, नरेन्द्र मेहता, कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी, शरदचन्द्र चट्टोपाध्याय, [illegible]मचन्द्र चटर्जी, रवीन्द्र नाथ टैगोर आदि द्वारा रचित पुस्तकों को प्रकाशित कर भारतीय संस्कृति व हिन्दी साहित्य की अविस्मरणीय सेवा की है। अपने पितामह पं. नाथूराम जी प्रेमी से मिली विरासत को भली प्रकार से संभाल कर रखा एवं अपनी नई पीढ़ी को प्रेरित किया। वे धार्मिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक आदि संस्थाओं से जुड़े थे।

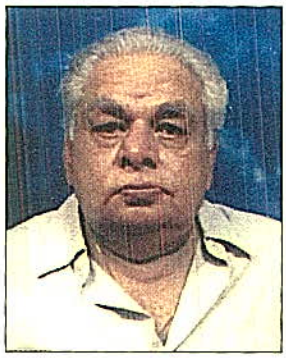

श्री रमेश जैन तिजारिया, जयपुर की तृतीय पुत्र वधू श्रीमती पूर्णिमा जैन का असामयिक दु:खद निधन

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन अग्रवाल महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, प्रसिद्ध समाजसेवी श्री रमेश जी जैन तिजारिया की तृतीय पुत्र वधू श्रीमती पूर्णिमा प्रवीण जैन का देहावसान 15 फरवरी, 2014 को हो गया। उनके दो पुत्र हैं। प्रथम पुत्र श्रेयांस जैन 14 वर्ष का एवं द्वितीय पुत्र आर्ष 6 वर्ष का है। श्रीमती पूर्णिमा जैन के आकस्मिक निधन से न केवल तिजारिया परिवार की अपितु जैन समाज की अपूरणीय क्षति हुई है।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं जैन तीर्थ वंदना महापरिवार उक्त महानुभावों के निधन पर शोक संवेदना व्यक्त करता है और दिवंगत आत्माओं के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके शोक संतप्त कुटुम्बीजनों को यह अपार दु:ख सहन करने की शक्ति मिले, ऐसी वीर प्रभु से प्रार्थना करता है।

सत्य परेशान हो सकता है, परन्तु पराजित नहीं।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार में हम हृदय की गहराईयों से आप सभी का स्वागत करते हैं, अभिनंदन करते हैं।

संरक्षक सदस्य

श्री पंकज एन. जैन, नई दिल्ली

सम्माननीय सदस्य

श्री संजय सुरेशचंद जैन, भीलवाड़ा

श्री अरविंद रावजी दोशी, मुंबई

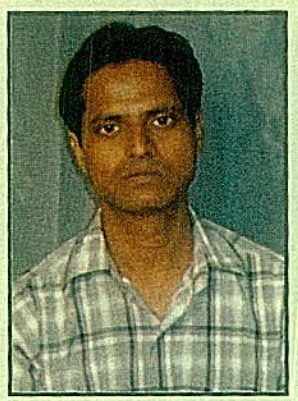

श्री आशीष सुरेशचंद जैन, जगाधरी

श्री अशोक महावीरप्रसाद जैन, दिल्ली

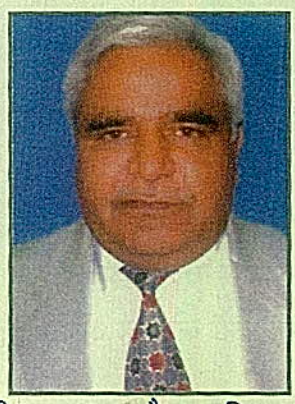

श्री जम्बुप्रसाद जैन, गाजियाबाद

श्री अनिलकुमार दिवाकर, सिवनी

श्री भरत जिनेन्द्र जैन, नई दिल्ली

श्री महेन्द्र पी. जैन, नई दिल्ली

PAVIT is proud to introduce under ROKEDGE - [IN]OUT series 5 new concepts with matching highlighters mainly for bathroom areas (wall & floor) in earthy & natural colors thus giving stone & rock like finish, in turn giving you more choice & options to create a seamless experience like never before. Available size : 600x300x10mm

DIGITAL HOMOGENEOUS VITRIFIED TILES

ROKEDGE
canvassing nature

Pavit Ceramics Pvt. Ltd. An ISO 9001 : 2008 Certified Company
303, Camps Corner-II, Near Prahladnagar Garden, Satellite, Ahmedabad-380015, INDIA.
Ph : +91 79 40266000, Fax : +91 79 40266099, info@pavits.com | www.pavits.com | Toll Free : 1800-233-3366 (10 am to 07 pm)

भगवान महावीर जन्मभूमि पर प्रथम बार

महामस्तकाभिषेक

उदय

9 से 13 अप्रैल, 2014

वासोकुण्ड, वैशाली,

जिला—मुजफ्फरपुर-844128 (बिहार)

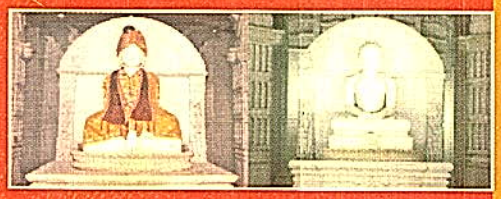

मंगल आशीर्वाद

प.पू. विद्यानन्दजी

प.पू. विद्यासागरजी

प.पू. वर्धमानसागरजी

मंगल नेतृत्व

प.पू. श्रुतसागरजी

मार्गदर्शक

पू. चारुकीर्ति भट्टारकजी

डॉ. वीरेन्द्र डी. हेगड़े

वर्तमान शासननायक भगवान महावीर की जन्मभूमि का **उदय** परमपूज्य आचार्य श्री विद्यानन्दजी मुनिराज की प्रेरणा एवं अन्य समस्त आचार्यों, मुनि भगवन्तों, गणमान्य राजनीतिज्ञों तथा सकल दिगम्बर जैन समाज की मंगल भावना से बिहार राज्य में एक तीर्थ क्षेत्र का **उदय** हो गया है।

भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति महामहिम डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी ने 23 अप्रैल, 1956 को 'भगवान महावीर स्मारक' की आधारशिला रखी थी। पिछले 56 वर्षों से यह स्थान उपेक्षित पड़ा था, अब इस महान् तीर्थक्षेत्र का **उदय** हो गया है।

भगवान महावीर ने दीक्षोपवास के पश्चात् पहला आहार (पारणा) कूलग्राम (वर्तमान कोल्हुआ) में किया था। इसी स्थान पर एक सिंह का स्तंभ बना हुआ है, जो अशोक स्तंभ के नाम से प्रसिद्ध है। भगवान महावीर का पहचान चिह्न सिंह ही है और उनके पूर्वजों का यहाँ पहले से साम्राज्य था। इसलिए यह स्तंभ भगवान् महावीर की दीक्षा की स्मृति में वज्जियों और लिच्छिवियों द्वारा बनवाया गया था। यह हमारे जैन समाज की ऐतिहासिक धरोहर है जो 2000 वर्षों से उपेक्षित पड़ी थी और अब हम सबके भाग्य से इसका **उदय** हुआ है। भगवान महावीर स्वामी की इस जन्मभूमि पर सन् 1948 से आज तक प्रतिवर्ष महावीर जयन्ती के पावन पर्व पर बिहार सरकार द्वारा 'वैशाली उत्सव' का आयोजन होता आ रहा है और इसकी अध्यक्षता बिहार के महामहिम राज्यपाल महोदय करते हैं।

हमें ऐसा संकल्प लेना चाहिए कि जब तक मन्दिरजी में निर्माण कार्य पूर्ण ना हो जाए तब तक हम प्रति माह एवं प्रतिवर्ष अपने परिवार और अपनी समाज की ओर से धनराशि भगवान महावीर जन्मभूमि के विकास में अवश्य प्रदान करें, ऐसी परमपूज्य श्वेतपिच्छाचार्यश्री विद्यानन्दजी मुनिराज की मंगल भावना है, पूज्यश्री की इस भावना का हमें सम्मान करना चाहिए। नीचे दी गई भावी योजआनों के संबंध में क्षेत्रीय अध्यक्षों से सम्पर्क करें-

(1) 5 ईंट 2500/- (2) एक गज ज़मीन 11000/- 3. मार्बल का प्रत्येक खम्बा 25000/- (4) प्रत्येक सीढ़ी की निर्माण राशि 51000/- 1,11,000/- की राशि देने वाले महानुभावों का नाम उचित स्थान पर शिलापट्ट पर अंकित किया जाएगा।

हम सबके लिए परम सौभाग्य का अवसर है कि भगवान महावीर की जन्मभूमि पर प्रथम बार भगवान महावीर स्वामी जी का मस्तकाभिषेक होने जा रहा है, जो इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित होगा। इस महान् धार्मिक एवं ऐतिहासिक कार्य के लिए वैशाली में भगवान महावीर स्वामी जी का मस्तकाभिषेक करके अपने जीवन को सफल बनायें। इच्छुक महानुभाव जो किन्हीं कारणों से वैशाली पहुँचने में असमर्थ हों उन महानुभावों का कलश हम कराकर हमारे प्रतिनिधि द्वारा उनके घर पर भेजने की व्यवस्था करेंगे।

महामस्तकाभिषेक में कलश राशि (1) आचार्य विद्यानन्द कलश, (2) रत्न कलश 1,11,000/- (3) स्वर्ण कलश 51000/- (4) रजत कलश 25000/- (5) वैशाली कलश 11000/- (6) कांस्य कलश 5100/- (7) जनमंगल कलश 2100/-

आपके द्वारा भेजी जाने वाली धनराशि भगवान महावीर स्मारक समिति, स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, IFSC Code : SBIN 0001624 जे.एन.यू. शाखा, नई दिल्ली में खाता संख्या 10596551078 में जमा कराई जा सकती है। राशि जमा कराने के पश्चात् कार्यालय में अवश्य सूचित करें।

भगवान महावीर स्मारक समिति दिल्ली कार्यालय : कुन्दकुन्द भारती, 18-बी, स्पेशल इंस्टीट्यूशनल एरिया, नई दिल्ली-110067

सम्पर्क सूत्र— 09810081861, 09871139942, 09899614433, 09334128122 ई-मेल : scjain@scjgroup.net, वेबसाईट : www.lordmahavirbirthplace.com

निर्माण कमेटी—नरेश जैन (कामधेनु सरिया) दिल्ली

ASHIANA ISPAT LIMITED

ASHIANA GROUP A Symbol of Quality

(ISO 9001-2008 Certified Co.)

Mfr.: ASHIANA®, KAMDHENU, AL KAMDHENU™ GOLD TMT

Regd. Office: A-1116, RIICO Industrial Area, Phase-III, Bhiwadi, Distt. - Alwar (Rajasthan), E-mail: ashianagroup@yahoo.co.in

Corp. Office: C-9/36, Sector-8, Rohini, Delhi-110085

दमदार सरिया

TMT Grade Fe 415,500,550